

03 गर्मियों में पृथ्वी से पाएँ फ्रेश ग्लो -----शहनाज हुसैन

06 प्रकृति, पानी और आधुनिक मनुष्य

08 बीएसएनएल चौक के पास आवासीय भवन में अवैध अस्पताल संचालन पर नोटिस जारी

आएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित
समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांक:- 29 मार्च, स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समय:- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है
इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रूप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़कों पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" * समर्पित एवं पूर्ण रूप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.inसड़कें अब शुद्धिकरण का केंद्र:
प्रदूषण को हराने वाला बायो-टावर

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

अब दिल्ली घुटती नहीं, जवाब देती है—और यह जवाब किसी मशीन ने नहीं, जीवित प्रकृति ने दिया है। बरसों से जहरीली हवा का बोझ ढोती राजधानी आज एक नई उम्मीद के साथ खड़ी है—माइक्रोएल्यूमी आधारित प्योरिफायर टावर के रूप में। एयरपॉलिटी के पास एनएच-48 के व्यस्त कॉरिडोर पर स्थापित यह संरचना महज तकनीक नहीं, बल्कि विज्ञान और प्रकृति के अद्भुत संगम की जीवंत मिसाल है। सड़क के बीचों-बीच खड़ा यह "जीवित एयर प्युरिफायर" न केवल प्रदूषण को थाम रहा है, बल्कि उसे ऑक्सीजन में बदलकर शहर को नई सांस दे रहा है। यह पहल साफ संकेत देती है कि आने वाला शहरी भविष्य कंक्रीट से नहीं, बल्कि जैविक समाधान पर आधारित होगा।

जब सारे पारंपरिक उपाय बेअसर होकर उठर गए, तब यह टावर एक शांत लेकिन प्रभावशाली क्रांति के रूप में उभरकर सामने आया। दिल्ली में पहले लगाए गए स्मॉग टावर बड़े, ऊर्जा-खपत वाले और सीमित प्रभाव वाले साबित हुए थे। इसके विपरीत, माइक्रोएल्यूमी प्योरिफायर टावर सीधे उसी सड़क स्तर पर सक्रिय होता है, जहां प्रदूषण अपनी चरम सघनता पर होता है। यह न शीर करता है, न जटिल मशीनों पर निर्भर रहता है। इसके बजाय, यह सूक्ष्म शैवाल की प्राकृतिक प्रक्रिया का उपयोग करता है, जो प्रदूषकों को अपने पोषण के रूप में ग्रहण करते हैं। यह प्रणाली केवल प्रदूषण को रोकती नहीं, बल्कि उसे उपयोगी संसाधन में परिवर्तित करती है— यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

जब सूक्ष्मता ही असली ताकत बन जाए, तब माइक्रोएल्यूमी का विज्ञान अपने प्रभाव से चौंकाता है—छोटा आकार, पर व्यापक और ठोस असर। ये सूक्ष्म जीव पानी में रहते हुए पेड़ों की तरह प्रकाश संश्लेषण करते हैं, लेकिन कहीं अधिक तेज और दक्षता के साथ। सूर्य प्रकाश और एलईडी की सहायता से ये कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, सल्फर ऑक्साइड तथा पीएम2.5 व पीएम10 जैसे कणों को अवशोषित करते हैं। शोध बताते हैं कि कुछ प्रजातियां पेड़ों



की तुलना में 10 से 50 गुना अधिक कार्बन सोखने में सक्षम हैं। इस पूरी प्रक्रिया में न हानिकारक अपशिष्ट बनता है, न अतिरिक्त ऊर्जा लगती है—यह एक स्वाभाविक और सतत समाधान है। जब एक छोटा-सा ढांचा ही "हरे फेफड़े" की ताकत समेट ले, तब इस टावर की असली क्षमता सामने आती है। एक अकेला टावर सालाना लगभग 340 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर सकता है और करीब 15 लाख लीटर ऑक्सीजन उत्पन्न करता है। इसका प्रभाव लगभग 15-20 परिपक्व पेड़ों के बराबर है, जबकि यह केवल कुछ वर्ग मीटर जगह घेरता है। शहरी इलाकों में, जहां जमीन सीमित है और पेड़ों को बढ़ने में वर्षों लगते हैं, यह टावर तुरंत सक्रिय होकर परिणाम देने लगता है। यह केवल हवा को शुद्ध नहीं करता, बल्कि उत्पन्न बायोमास को खाद या बायोचार में बदलकर सर्कुलर इकोनॉमी का भी सशक्त हिस्सा बनता है।

जब समाधान सिर्फ रोकने नहीं, बल्कि रूपांतरित करने लगे, तभी असली बदलाव जन्म लेता है—और यही नई सोच इस तकनीक में झलकती है। जहां पारंपरिक एयर प्युरिफिकेशन सिस्टम प्रदूषण को फिल्टर में कैद कर आगे कचरे की नई समस्या खड़ी करते थे, वहीं यह टावर उसी प्रदूषण को उपयोगी संसाधन में बदल देता है। यह एक बायोमिमेटिक फोटोबायोरिएक्टर है—यानी प्रकृति की कार्यप्रणाली से प्रेरित प्रणाली। इसकी ऊर्जा खपत न्यूनतम, रखरखाव सरल

और कार्यप्रणाली सतत है। इस दृष्टि से यह समाधान केवल पर्यावरण के लिए ही नहीं, बल्कि आर्थिक रूप से भी कहीं अधिक टिकाऊ और व्यावहारिक है। जब दूरदृष्टि और शोध की मजबूती मिलती है, तभी ऐसा नवाचार आकार लेता है जो वास्तव में असरदार हो। इस टावर के पीछे केवल तकनीक नहीं, बल्कि ठोस वैज्ञानिक सोच है। भारतीय वैज्ञानिकों और स्टार्टअप्स ने इसे स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित किया है। माइक्रोएल्यूमी की ऐसी प्रजातियां चुनी गई हैं जो दिल्ली की गर्मी, धूल और उच्च प्रदूषण में भी टिक सकें। साथ ही, इसमें रीयल-टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम है, जो वायु गुणवत्ता, अवशोषित कार्बन और उत्पन्न ऑक्सीजन की जानकारी देता है। यह डेटा-आधारित दृष्टिकोण भविष्य के शहरी नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जब हवा ही जहर बन जाए, तब उसे शुद्ध करने वाला हर समाधान जीवनदाता बन जाता है—यही इस तकनीक की असली ताकत है। इसका सीधा असर आम लोगों की सेहत पर पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वायु प्रदूषण हर साल लाखों समयपूर्व मौतों का कारण बनता है। दिल्ली जैसे शहर में यह संकट और गहरा है, जहां सांस, हृदय और न्यूरोलॉजिकल बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में सड़क स्तर पर प्रदूषण घटाने वाला यह टावर बच्चों, बुजुर्गों और रोजाना सफर करने वालों के लिए किसी वरदान से कम नहीं। यह केवल हवा साफ नहीं

करता, बल्कि जीवन की गुणवत्ता को भी बेहतर बनाता है।

जब सड़कें सिर्फ रास्ता नहीं, बल्कि समाधान बनने लगे, तभी भविष्य की असली दिशा स्पष्ट होती है—जहां विकास और पर्यावरण साथ-साथ आगे बढ़ते हैं। यदि इस तकनीक को बड़े पैमाने पर अपनाया जाए, तो शहरों के हाईवे, फ्लाईओवर और भीड़भाड़ वाले क्षेत्र प्रभावी "बायो-डिवाइडर" में बदल सकते हैं। यह न केवल प्रदूषण को नियंत्रित करेगा, बल्कि शहरी हरियाली को एक नई पहचान और विस्तार देगा। सरकार और निजी क्षेत्र के मजबूत सहयोग से यह मॉडल देशभर में व्यापक रूप से लागू किया जा सकता है, जिससे भारत अपने नेट-जीरो लक्ष्यों को और और भी तेज, ठोस और सतत कदम बढ़ा सकेगा।

जब बदलाव की शुरुआत छोटे कदमों से होती है, तभी बड़े भविष्य की नींव रखी जाती है—और यही इस पहल का सार है। यह संदेश स्पष्ट है कि समाधान कहीं दूर नहीं, हमारे आसपास ही मौजूद है, बस उन्हें समझने और अपनाने की जरूरत है। माइक्रोएल्यूमी प्योरिफायर टावर इस बात का जीवंत प्रमाण है कि प्रकृति के साथ तालमेल ही सबसे प्रभावी रास्ता है। दिल्ली की सड़कों पर खड़ा यह छोटा-सा टावर आने वाले समय में एक बड़े परिवर्तन का आधार बन सकता है। यह केवल तकनीक नहीं, बल्कि एक नई सोच का उद्घोष है—जहां विकास और पर्यावरण साथ-साथ, संतुलन के साथ आगे बढ़ते हैं।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करें, यह बिल्कुल निशुल्क है, अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करें
<https://www.newsparivahan.com/chief-editor/https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9>
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा के जनहित कार्यों को समर्पित



सड़क सुरक्षा



महिला सुरक्षा



प्रदूषण



साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है, तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुल्क आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया

<https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9>

मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

गर्मियों में पुदीने से पाएं फ्रेश ग्लो : शहनाज़ हुसैन

हैं / पुदीने की पतियों के रस को चेहरे पर लगाने से त्वचा में ताजगी और कोमलता आती है / पुदीने के रस से त्वचा को पोस खल जाते हैं / पुदीने की पतियों के रस को दही या शहद के साथ मिलाने से काफी फायदा होता है /

गर्मियों में जयादातर महिलाओं को पिगमेंटेशन की समस्या से जूझना पड़ता है / इसके लिए पुदीने के पत्ते लेकर इनमें गुलाब जल मिलाए / इसमें ओट्स मिलाकर फेस पैक तैयार कर लें / इसे पुरे चेहरे पर स्क्रब कर लें और कुछ देर बाद ताजे पानी से धो डालें / कुछ ही दिनों में फर्क दिखना शुरू हो जाएगा

कांच की कटोरी में पुदीने की ताजा पतियों का रस निकाल लें / अब ताजे खीरे को छीलकर काट लें और उसे कद्दूस कर लें। अब इनके अंदर एक चम्मच शहद मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पैक को अपने चेहरे और गर्दन के इर्द गिर्द खुले अंगो पर आधा घण्टा तक लगाने के बाद ताजे पानी से धो डालें / इस पैक को नियमित तौर पर चेहरे पर लगाने से कील मुहांसों से छुटकारा मिलेगा और सन बर्न से झुलसी त्वचा को भी ठंडक मिलेगी।

पुदीने का फेशियल ऑयली त्वचा के लिए काफी फायदेमंद साबित होता है /

ताजा सुगन्ध और सकेत के लिए फायदेमंद पुदीना गर्मियों में चेहरे पर कमाल का असर दिखाता है /

आप इसका इस्तेमाल फेस पैक, टोनर या सीरम के रूप में भी कर सकते हैं। इसमें प्रोटीन विटामिन, जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो त्वचा के लिए फायदेमंद होते हैं/ एंटीसेप्टिक होने के कारण इसका प्रयोग बाँटी क्लींजर, साबुन और बाँटी वॉश के रूप में होने लगा है।

ठण्डी तासीर की बजह से गर्मियों में पुदीना मॉइश्चराइजर की तरह काम करता



Mint Face Pack For Summer

है, एक कांच के बर्तन में दो बड़े चम्मच ताजा पीसे पुदीने के साथ दो बड़े चम्मच दही और एक बड़ा चम्मच ओटमिल लेकर गाढ़ा

घोल बनाएं। इसे चेहरे पर 15 मिनट तक लगाने के बाद चेहरे को ताजे पानी से धो लें। पिप्पल की समस्या के निदान के लिए

पुदीने का नियमित उपयोग मददगार साबित हो सकता है/ पुदीने के रस को नारियल तेल में डालकर पिप्पल पर लगाने से राहत

मिलेगी ऐसा करने से कुछ ही दिनों में पिप्पल दूर हो जाएगा और उनके निशान और दाग, धब्बे भी हल्के होने लग जाएंगे/

पुदीने और गुलाब जल का पैक त्वचा को कोमल और मुलायम बनाने में काफी सहायक होता है/ पुदीने के रस में एक चम्मच शहद और थोड़ा सा गुलाब जल मिलकर बने पैक को चेहरे पर कुछ देर तक लगाने के बाद ताजे पानी से धो डालें। गुलाब जल त्वचा के पी एच लेवल को संतुलित करता है

एक पका केला लेकर इसे अच्छी तरह मैश कर लें / अब इसमें पुदीने के कुछ पतियों का पेस्ट डाल दें/ इस फेस पैक को चेहरे पर लगाने के आधा घण्टा बाद चेहरे को ताजे ठण्डी पानी से धो डालें

अगर आपके बाल पतले पड़ गए और आप बालों को रुसी आदि की समस्या से जूझ रहे हैं तो पुदीना काफी मददगार साबित हो सकता है / आप अपने खाने में पुदीने की चटनी को नियमित रूप से शामिल करें / पुदीने का हेयर मास्क बनाने के लिए एक कांच के बर्तन में पुदीने के 10-12 पत्ते पीस लें / अब आप चने की दाल और दही को पीसकर इसका पेस्ट तैयार कर लें और इसमें पीसे पुदीने के पत्तों को मिलाकर / इस मास्क को बालों पर लगाने के आधा घण्टा बाद बालों को ताजे पानी से धो डालें।

लेखिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेषज्ञ हैं और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय हैं

Pyridoxine (Vitamin B6).

मानव स्वास्थ्य के लिए महत्व, कमी के लक्षण और प्राकृतिक स्रोत

पाइरिडॉक्सिन (विटामिन B6) जल में घुलनशील बी-कॉम्प्लेक्स विटामिनों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। यह शरीर की अनेक जैविक प्रक्रियाओं में भाग लेता है, विशेष रूप से मस्तिष्क के कार्य, तंत्रिका तंत्र, ऊर्जा उत्पादन, रक्त निर्माण तथा प्रतिरक्षा प्रणाली को स्वस्थ बनाए रखने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

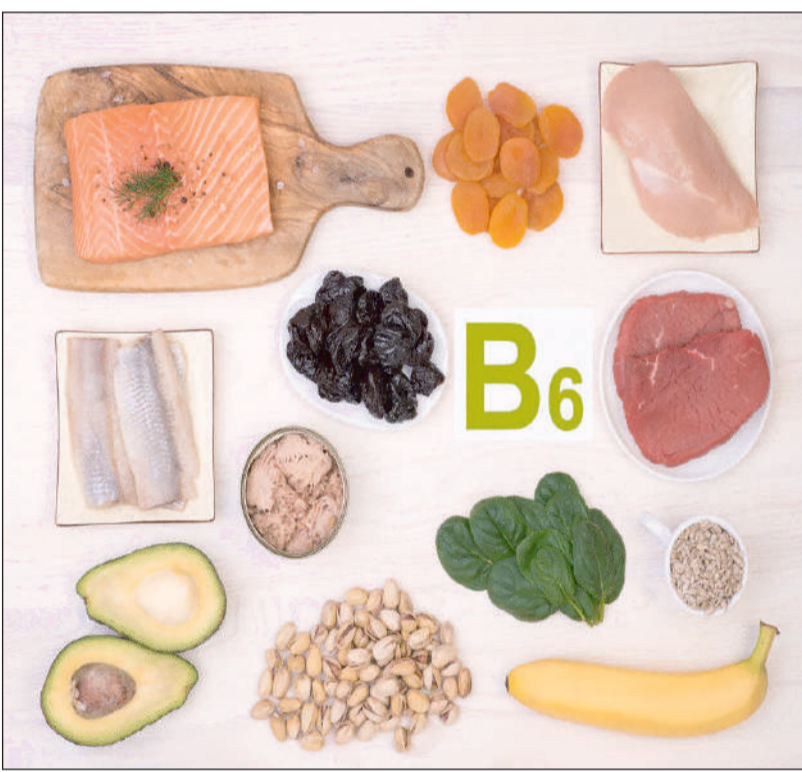
मानव शरीर में इसका भंडारण सीमित मात्रा में होता है, इसलिए इसे नियमित रूप से संतुलित आहार के माध्यम से प्राप्त करना आवश्यक है।

1. Vitamin B6 की कमी के प्रमुख लक्षण
यदि शरीर में Vitamin B6 की कमी हो जाए तो धीरे-धीरे अनेक शारीरिक और मानसिक लक्षण दिखाई देने लगते हैं, जैसे: तंत्रिका एवं मानसिक लक्षण चिड़चिड़ापन और मानसिक अस्थिरता ध्यान और स्मरण शक्ति में कमी नींद में बाधा या बेचैनी हाथ-पैरों में झनझनाहट शारीरिक लक्षण लगातार थकान और कमजोरी

त्वचा पर सूजन या दाने होठों के किनारों पर दरारें जीभ में सूजन या जलन रक्त संबंधी लक्षण लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में कमी एनीमिया (रक्ताल्पता) प्रतिरक्षा से संबंधित लक्षण संक्रमण जल्दी होना धावों का देर से भरना
2. Vitamin B6 की दैनिक आवश्यकता
विभिन्न आयु समूहों में Vitamin B6 की अनुमानित दैनिक आवश्यकता निम्न प्रकार मानी जाती है:
वयस्क पुरुष : लगभग 1.3 – 1.7 mg
प्रतिदिन
वयस्क महिलाएँ : लगभग 1.3 – 1.5 mg
प्रतिदिन
गर्भवती महिलाएँ : लगभग 1.9 mg
प्रतिदिन
स्तनपान कराने वाली महिलाएँ : लगभग 2.0 mg प्रतिदिन
यह मात्रा सामान्य संतुलित आहार से आसानी से प्राप्त हो सकती है।
3. Vitamin B6 के प्राकृतिक खाद्य स्रोत

प्रकृति ने अनेक ऐसे खाद्य पदार्थ प्रदान किए हैं जिनमें Vitamin B6 प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
दालें और अनाज चना (Chickpeas) मसूर दाल उड़द दाल राजमा मूंग दाल साबुत अनाज गेहूँ जौ ओट्स ब्राउन राइस
बीज और मेवे सूरजमुखी के बीज तिल अलसी अखरोट पिस्ता सब्जियाँ पालक आलू शकरकंद

गाजर फल केला पपीता एवोकाडो पशु-आधारित स्रोत मछली अंडा दूध चिकन
4. प्राकृतिक भोजन का महत्व प्राकृतिक और संतुलित आहार से प्राप्त पोषक तत्व शरीर के लिए सबसे सुरक्षित और उपयोगी माने जाते हैं क्योंकि: इनसे एक साथ कई आवश्यक विटामिन और खनिज मिलते हैं पोषक तत्वों का अवशोषण बेहतर होता है अनावश्यक सप्लीमेंट्स के दुष्प्रभावों से बचाव होता है
✓ निष्कर्ष पाइरिडॉक्सिन (Vitamin B6) मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक पोषक तत्व है, जो मस्तिष्क स्वास्थ्य, तंत्रिका तंत्र, ऊर्जा उत्पादन, रक्त निर्माण और रोग प्रतिरोधक



क्षमता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
दालें, साबुत अनाज, बीज, सब्जियाँ और

फल जैसे प्राकृतिक खाद्य पदार्थों का नियमित सेवन शरीर में इसकी पर्याप्त मात्रा बनाए रखने में सहायक होता है।

जब शरीर में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व (Micronutrients) जैसे Vitamin B12, Vitamin D, Pyridoxine (Vitamin B6) और Biotin (Vitamin B7) पर्याप्त मात्रा में उपस्थित होते हैं, तो वे मस्तिष्क के स्वस्थ कार्य, स्थिर ऊर्जा-चयापचय (Energy Metabolism) तथा तंत्रिका तंत्र की सुचारु गतिविधि को बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जब शरीर में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व (Micronutrients) जैसे Vitamin B12, Vitamin D, Pyridoxine (Vitamin B6) और Biotin (Vitamin B7) पर्याप्त मात्रा में उपस्थित होते हैं, तो वे मस्तिष्क के स्वस्थ कार्य, स्थिर ऊर्जा-चयापचय (Energy Metabolism) तथा तंत्रिका तंत्र की सुचारु गतिविधि को बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
ऐसी स्थिति में सामान्यतः व्यक्ति को गहरी और सुकून देने वाली नींद आती है और सुबह जागने पर वह ताजगी, मानसिक स्पष्टता और शारीरिक ऊर्जा का अनुभव करता है।
लेकिन जब इन विटामिनों—विशेषकर Vitamin B12 और Vitamin D—की कमी हो जाती है, तब शरीर में कई प्रकार के शारीरिक और तंत्रिकीय असंतुलन उत्पन्न हो सकते हैं, जो नींद की गुणवत्ता, ऊर्जा स्तर, मनोदशा और तंत्रिका स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।
नीचे इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विवरण प्रस्तुत है।

चक्र और मानसिक सतर्कता बनाए रखने में सहायता मिलती है।
यह विटामिन मेलानोटॉन (Melatonin) से जुड़े सर्कैडियन रिथम को भी प्रभावित करता है, जो शरीर की नींद-जागरण को जैविक घड़ी को नियंत्रित करता है।
वैज्ञानिक शोधों से यह भी संकेत मिला है कि Vitamin B12 की कमी से नींद की गुणवत्ता खराब हो सकती है तथा तंत्रिका संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
Vitamin B6 (Pyridoxine) Vitamin B6 मस्तिष्क में कई महत्वपूर्ण न्यूरोट्रान्समीटर के निर्माण के लिए आवश्यक है, जैसे: Serotonin Dopamine GABA Melatonin ये रसायन मूड, मानसिक शांति और नींद-जागरण चक्र को नियंत्रित करते हैं।
जब Vitamin B6 पर्याप्त मात्रा में होता है, तो मस्तिष्क में रासायनिक संतुलन बना रहता है, जिससे व्यक्ति को शांत और गहरी नींद मिलती है।
Vitamin D Vitamin D वास्तव में केवल एक विटामिन नहीं, बल्कि एक हार्मोन जैसा कार्य करने वाला तत्व है। यह शरीर में कई महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है, जैसे: मस्तिष्क का कार्य मांसपेशियों की ऊर्जा प्रतिरक्षा प्रणाली का संतुलन मनोदशा की स्थिरता मस्तिष्क के कई क्षेत्रों में Vitamin D के रिसेप्टर्स पाए जाते हैं, जो नींद और भावनात्मक नियंत्रण से संबंधित होते हैं।
Vitamin D की कमी अक्सर निम्न समस्याओं से जुड़ी पाई गई है: लगातार थकान मांसपेशियों की कमजोरी



मनोदशा में गिरावट ये सभी स्थितियाँ नींद की गुणवत्ता और दिनभर की ऊर्जा को प्रभावित कर सकती हैं।
Biotin (Vitamin B7) Biotin मुख्य रूप से निम्न प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है: ऊर्जा चयापचय (Energy Metabolism) फैटी एसिड का चयापचय ग्लूकोज का संतुलन यह भोजन को उपयोगी ऊर्जा में परिवर्तित करने में सहायता करता है, जिससे शरीर की कोशिकाओं को पर्याप्त ऊर्जा मिलती है और तंत्रिका तंत्र का कार्य सुचारु रहता है।
2. जब विटामिन का स्तर सामान्य होता है जब ये सभी विटामिन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं, तब: तंत्रिका तंत्र कुशलतापूर्वक कार्य करता है लाल रक्त कोशिकाएँ उतकों तक पर्याप्त ऑक्सीजन पहुँचाती हैं न्यूरोट्रान्समीटर संतुलित रहते हैं कोशिकाओं की ऊर्जा उत्पादन प्रक्रिया सुचारु रहती है परिणामस्वरूप: नींद गहरी और ताजगी देने वाली होती है सुबह उठते समय व्यक्ति ऊर्जावान और मानसिक रूप से सतर्क महसूस करता है मनोदशा संतुलित रहती है स्मरण शक्ति और मानसिक क्षमता बेहतर रहती है अर्थात्, पोषण का संतुलन शरीर में जैविक

सामंजस्य स्थापित करता है, जिससे शरीर को नींद के दौरान स्वयं की मरम्मत और पुनर्निर्माण का अवसर मिलता है।
3. विटामिन की कमी के प्रभाव जब इन विटामिनों की कमी होती है, तब शरीर का चयापचय और तंत्रिका संतुलन धीरे-धीरे प्रभावित होने लगता है।
लगातार नींद और थकान Vitamin B12 की कमी से एनीमिया और तंत्रिका कार्य में कमी हो सकती है। इससे उतकों तक ऑक्सीजन की आपूर्ति घट जाती है, जिसके परिणामस्वरूप: अत्यधिक थकान बार-बार नींद आना ऊर्जा और सहनशक्ति में कमी देखी जा सकती है।
कुछ मामलों में Vitamin B12 की कमी को दिन में अत्यधिक नींद आने (Hypersomnia) के दुर्लभ कारण के रूप में भी देखा गया है।
नींद के बाद भी ताजगी का अभाव कई बार व्यक्ति पर्याप्त समय तक सोने के बाद भी जागने पर महसूस करता है: सुस्ती कमजोरी मानसिक धुंधलापन (Brain Fog) काम करने की इच्छा में कमी यह स्थिति इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि ऊर्जा उत्पादन और तंत्रिका संकेतों की प्रक्रिया बाधित रहती है।
मनोदशा में परिवर्तन

विटामिन की कमी के कारण निम्न मानसिक लक्षण भी उत्पन्न हो सकते हैं: चिड़चिड़ापन अवसाद चिंता उत्साह की कमी ऐसा इसलिए होता है क्योंकि विटामिन की कमी न्यूरोट्रान्समीटर के निर्माण और तंत्रिका कोशिकाओं के चयापचय को प्रभावित करती है।
तंत्रिका संबंधी लक्षण यदि विशेष रूप से Vitamin B12 की कमी लंबे समय तक बनी रहे, तो यह निम्न समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है: हाथ-पैरों में झनझनाहट या सुन्नाता स्मरण शक्ति में कमी ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई संतुलन में समस्या ये लक्षण इसलिए उत्पन्न होते हैं क्योंकि तंत्रिकाओं को ढकने वाली सुरक्षात्मक परत (Myelin Sheath) को क्षति पहुँच सकती है।
4. "नींद आती है, पर ताजगी नहीं मिलती" – इसका कारण विटामिन की कमी में अक्सर एक विशेष स्थिति देखी जाती है जिसे Non-restorative Sleep कहा जाता है। इसमें व्यक्ति: दिन में बार-बार नींद महसूस करता है लंबी नींद लेता है फिर भी जागने पर थका हुआ और ऊर्जा-विहीन महसूस करता है ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कोशिकीय ऊर्जा उत्पादन, न्यूरोट्रान्समीटर संतुलन और ऑक्सीजन परिवहन सभी प्रभावित होते हैं।
5. हाल के वैज्ञानिक अवलोकन हाल के वर्षों में चिकित्सा विशेषज्ञों ने कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उजागर किए हैं: भारत जैसे धूप वाले देशों में भी Vitamin D की

कमी बहुत सामान्य हो गई है, जिसका कारण है आधुनिक जीवनशैली, घर के अंदर अधिक समय बिताना और प्रदूषण।
कई बार विटामिन का स्तर "सीमा के भीतर" होने के बावजूद भी ऊर्जा और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।
वैज्ञानिक अब सूक्ष्म पोषक तत्वों और नींद के विकारों के बीच संबंध पर अधिक शोध कर रहे हैं।
आधुनिक चिकित्सा में अब अस्पष्ट थकान और नींद की समस्याओं वाले मरीजों में पोषण संबंधी जांच को भी महत्व दिया जा रहा है।
6. निष्कर्ष इस प्रकार Vitamin B12, Vitamin D, Pyridoxine (Vitamin B6) और Biotin का पर्याप्त स्तर बनाए रखना निम्नलिखित के लिए अत्यंत आवश्यक है: स्वस्थ नींद चक्र तंत्रिका तंत्र का सही कार्य संतुलित मनोदशा प्रभावी ऊर्जा चयापचय जब ये पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में होते हैं, तब व्यक्ति सामान्यतः गहरी और सुकून देने वाली नींद का अनुभव करता है और सुबह उठने पर ताजगी तथा ऊर्जा महसूस करता है।
लेकिन जब इनकी कमी हो जाती है, तब शरीर में निम्न लक्षण दिखाई दे सकते हैं: अत्यधिक नींद लगातार थकान सुस्ती और आलस्य मनोदशा में गिरावट तंत्रिका संबंधी असुविधाएँ इसलिए, यदि किसी व्यक्ति को बिना स्पष्ट कारण के लगातार थकान, सुस्ती या नींद की समस्या हो रही हो, तो संतुलित आहार बनाए रखने के साथ-साथ समय-समय पर विटामिन स्तर की जांच कराना स्वास्थ्य की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

धर्म अध्यात्म



चैत्र नवरात्रि के दूसरे दिन इस विधि से करें मां ब्रह्मचारिणी की पूजा और पढ़ें कथा

आज चैत्र नवरात्रि का दूसरा दिन है। नवरात्रि के दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा-उपासना होती है। मां दुर्गा के नौ शक्तियों में देवी ब्रह्मचारिणी का दूसरा स्वरूप है। ब्रह्मचारिणी दो शब्दों से मिलकर बना है। 'ब्रह्म' का मतलब घोर तपस्या से है और 'चारिणी' का अर्थ होता है आचरण से। यानी माता का दूसरा स्वरूप तप का आचरण करने से होता है। धार्मिक मान्याओं के अनुसार नवरात्रि के दूसरे दिन मां के इस स्वरूप की पूजा करने से व्यक्ति के जीवन में कभी भी धन, संपत्ति और सुख की कमी नहीं होती है। मां दुर्गा के नव शक्तियों के इस दूसरे स्वरूप देवी ब्रह्मचारिणी ने अपने पूर्व जन्म में जब हिमालय के घर में पुत्री रूप में उत्पन्न हुई थीं तब नारद जी के उपदेश से इन्होंने भगवान शंकर जी को पति रूप में प्राप्त करने के लिए अत्यंत कठिन तपस्या की थी। इस कठोर तपस्या के कारण इन्हें तपस्चारिणी अर्थात् ब्रह्मचारिणी नाम से समस्त जगत में पूजा जाता है।

मां ब्रह्मचारिणी पूजा मंत्र
ॐ ह्रीं क्लीं ब्रह्मचारिण्यै नमः
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वाहा नमोऽस्तुते ॥
या देवी सर्वभूतेषु मां ब्रह्मचारिणी रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
दधाना कर पद्भ्याम् अक्षमाला कमण्डलू। देवी प्रसीदतु मई ब्रह्मचारिण्यनुजना ॥
मां ब्रह्मचारिणी की पूजा विधि
मां ब्रह्मचारिणी की उपासना के समय पीले या सफेद वस्त्र धारण करें। फिर मां को सफेद वस्तुएं अर्पित करें जैसे मिश्री, शंकर या पंचामृत



मां ब्रह्मचारिणी की व्रत कथा

साथ ही, ज्ञान और वैराग्य का कोई भी मंत्र जपा जा सकता है लेकिन मां ब्रह्मचारिणी के लिए रुंके ऐं नमः का जाप सबसे उत्तम माना जाता है।
19 मार्च को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और शुक्ल योग में शुरुहोगी चैत्र नवरात्रि
नवरात्र के दूसरे दिन माता को शंकर का भोग लगाएं और भोग लगाने के बाद घर के सभी सदस्यों में बांटें।
मां ब्रह्मचारिणी की कथा
पौराणिक कथा के अनुसार, देवी पार्वती ने दक्ष प्रजापति के घर ब्रह्मचारिणी के रूप में जन्म लिया था। देवी पार्वती का यह स्वरूप किसी संत के समान था। एक बार उन्होंने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या करने का प्रण लिया। इनकी तपस्या हजारों वर्षों तक चली। भोषण गर्मी, कड़कड़ाती ठंड और तुफानी बारिश

भी इनकी तपस्या का संकल्प नहीं तोड़ पाई। कहते हैं कि देवी ब्रह्मचारिणी केवल फल, फूल और बिल्व पत्र की पत्तियां खाकर ही हजारों साल तक जीवित रही थीं। जब भगवान शिव नहीं मानते तो उन्होंने इन चीजों का भी त्याग कर दिया और बिना भोजन व पानी के अपनी तपस्या को जारी रखा पत्तों को भी खाना छोड़ देने के कारण उनका एक नाम 'अर्पणा' भी पड़ गया।
मां ब्रह्मचारिणी का नाम कैसे पड़ा
नवरात्रि के दूसरे दिन मां दुर्गा के तपस्विनी रूप की पूजा की जाती है। शास्त्रों के अनुसार, मां दुर्गा ने पार्वती के रूप में हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लिया था। नारद मुनि की सलाह पर उन्होंने भगवान शिव को अपना पति प्राप्त करने के लिए अत्यंत कठोर तपस्या की थी। हजारों वर्षों तक निरंतर तपस्या करने के कारण

ही उन्हें तपस्विनी और ब्रह्मचारिणी के नाम से जाना जाता है। इस कठिन तपस्या के दौरान, मां पार्वती ने कई वर्षों तक बिना कुछ खाए-पिए कठोर तप किया और भगवान शिव को प्रसन्न किया। उनके इस तपस्वी जीवन के प्रतीक स्वरूप नवरात्रि के दूसरे दिन उनकी पूजा और स्तवन किया जाता है। इस दिन, मां ब्रह्मचारिणी के रूप में उनकी पूजा उनके दृढ़ संकल्प और समर्पण को दर्शाती है। यह दिन हमें यह शिक्षा देता है कि सच्ची श्रद्धा, धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ हम किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।
मां ब्रह्मचारिणी का स्वरूप
मां ब्रह्मचारिणी, ज्ञान और विद्या की देवी हैं, जो अपने भक्तों को सफलता और विजय प्रदान करती हैं। इनका रूप अत्यंत सरल, सशक्त और सुंदर है। मां ब्रह्मचारिणी सफेद वस्त्र

धारण करती हैं। उनके एक हाथ में अष्टदल की माला तथा दूसरे हाथ में कमंडलु धारण करती हैं। ये देवी ज्ञान, तपस्या और वैराग्य की अधिष्ठात्री हैं और समस्त सृष्टि के ज्ञान की स्वामिनी मानी जाती हैं। उनके हाथों में मौजूद अक्षयमाला और कमंडलु शास्त्रों, तंत्र-मंत्र और आध्यात्मिक ज्ञान के प्रतीक हैं। मां ब्रह्मचारिणी का स्वभाव बहुत ही शांत और दयालु है। वह जल्दी प्रसन्न होती हैं और अपने भक्तों को आशीर्वाद देती हैं। जो भी भक्त सच्चे मन से इनकी पूजा करता है, उसकी सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। विशेष रूप से, विद्यार्थियों को मां ब्रह्मचारिणी की पूजा से ज्ञान और विद्या में सफलता प्राप्त होती है।
आचार्य पंडित सुधांशु तिवारी प्रश्न कुण्डली विशेषज्ञ /



हिंदू नववर्ष
विभिन्न परंपराओं का समावेश बढ़ता है उत्कर्ष, चैत माह शुक्ल पक्ष से आरंभ होता हिंदू नववर्ष, अनेक नामों से है जग विख्यात हिंदू नव संवत्सर, प्रकृति भी गाती मंगल गीत जन-मानस में हो हर्ष।
चैत माह के नवरात्रों का होता है यहीं से आरंभ, नौ दिन देवी की आराधना करते भक्तगण प्रारंभ, नई उमंग नई चेतना नया उत्साह उल्लास अपार, आशीर्वाद से शक्ति की सुखी जीवन का शुभारंभ।
अत्यंत पुण्यदाई तिथि ये करें वेद पुराण उल्लेख, रआनंदरं बरसाने वाला बसंत भी आ गया है देख, होता आध्यात्मिक चेतना का पुनर्जागरण प्रखर, भक्ति व शक्ति का समन्वय बदले भाग्य की रेख।
भारतीय संस्कृति की विविधता पर सभी को गर्व, तिथि विशेष त्यौहार मनाएं विभिन्न राज्य ये सर्व, बढे भारत शुभेच्छा यहीं जगमग सारा हो परिवार, गुड़ी पड़वा, नवरेह, चेटीचंड, विशू, बिहू समृद्धि पर्व।
- मोनिका ढागा "आनंद"
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद रचना स्वरचित और सर्वाधिकार सुरक्षित

साई झुलेलाल साहिब की 1076वीं जयंती 20 मार्च 2026, चेटीचंड महोत्सव और ईद-उल-फितर का अद्भुत संयोग-विश्वव्यापी आस्था, संस्कृति और सद्भाव का संगम- समग्र विश्लेषण

दुनियां में जब जब अत्याचार बढ़ा है, तब तब भगवान ने अपने भक्तों के लिए धरती में जन्म लिया है- 1076 वीं झुलेलाल जयंती इसका प्रतीक

झुलेलाल की 1076वीं जयंती व पवित्र इस्लामिक त्योहार ईद-उल-फितर का संयोग न केवल भारत की विविधता में एकता की परंपरा को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और भाईचारे का संदेश भी देता है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी की गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर भारत सहित पूरे विश्व में वर्ष 2026 का मार्च महीना धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समरसता का एक अदृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। एक ओर सिंधी समाज के आराध्य देव झुलेलाल की 1076वीं जयंती का भव्य आयोजन हो रहा है, वहीं दूसरी ओर पवित्र इस्लामिक त्योहार ईद-उल-फितर भी लगभग उसी समय मनाए जाने की संभावना है। यह संयोग न केवल भारत की विविधता में एकता की परंपरा को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और भाईचारे का संदेश भी देता है। सिंधी समाज के लिए चेटीचंड केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान, ऐतिहासिक विरासत और सामाजिक एकता का प्रतीक है। यह दिन झुलेलाल साहिब के अवतरण दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिन्हें जल के देवता और सत्य एवं न्याय के संरक्षक के रूप में पूजा जाता है। एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह बताना चाहते हैं कि विश्वभर में फैले सिंधी समुदाय चाहे वे भारत में हों या अमेरिका, दुबई, यूके, अफ्रीका या एशिया के अन्य देशों में इस दिन को अत्यंत श्रद्धा, उल्लास और भव्यता के साथ मनाते हैं। वर्ष 2026 में यह उत्सव और भी विशेष बन गया है क्योंकि इसे सात दिवसीय चेटीचंड पखवाड़ा महोत्सव के रूप में 15 से 20 मार्च तक व्यापक स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। विभिन्न झुलेलाल जयंती समारोह समितियों, पंचायतों, सामाजिक संगठनों, सिंधी विद्यालयों तथा व्यापारिक और धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से यह आयोजन एक वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव का रूप ले चुका है। इस दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रम न केवल धार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं, बल्कि समाजसेवा, स्वास्थ्य जागरूकता सांस्कृतिक संरक्षण और युवा सहभागिता को भी प्रोत्साहित करते हैं। इस सप्ताह के दौरान प्रभात फेरियों से दिन की शुरुआत होती है,

जिसमें श्रद्धालु भजन-कीर्तन करते हुए झुलेलाल साहिब की महिमा का गुणगान करते हैं। रक्तदान शिविरों का आयोजन समाज के प्रति जिम्मेदारी और मानवता की सेवा का संदेश देता है। चित्रकला प्रतियोगिताएं बच्चों और युवाओं की रचनात्मकता को मंच प्रदान करती हैं, वहीं योग शिविर स्वास्थ्य और संतुलित जीवनशैली को बढ़ावा देते हैं। व्यापार मेलों और आनंद मेलों के माध्यम से स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है और सामाजिक मेलजोल बढ़ता है। महिलाओं की स्कूटर रैली और रंगोली कार्निवल जैसे आयोजन महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और सशक्तिकरण का प्रतीक हैं। छप्पन भोग जैसे धार्मिक प्रसाद और फूड फेस्टिवल इस उत्सव को स्वाद और परंपरा का अनुदा संगम बना देते हैं। 19 मार्च को भव्य आतिशबाजी और सांस्कृतिक कार्यक्रम इस उत्सव को चरम पर पहुंचाते हैं, जहां संगीत, नृत्य और भक्ति का अद्भुत समागम देखने को मिलता है।
साथियों बात अगर हम 20 मार्च 2026 के महत्व को समझने की करें तो यह दिन इस उत्सव और सामुदायिक सहयोग का उत्सव है। यह त्योहार अल्लाह के प्रति आभार, आत्मसंयम, दान और करुणा का प्रतीक है। रमजान के पूरे महीने रोजा रखने के बाद ईद का दिन खुशी, संतोष और आध्यात्मिक संतुलन का संदेश लेकर आता है। ईद के दिन विशेष नामाज अदा की जाती है, फिरा (दान) दिया जाता है और लोग एक-दूसरे को गले लगाकर ईद मुबारक कहते हैं। सेवइयां और अन्य मिठाइयों का वितरण इस पर्व की पहचान का प्रतीक है। यह जब दूसरों के साथ साझा किया जाए। यह त्योहार सामाजिक समरसता, परस्पर सम्मान और भाईचारे को सटीक रूप से मजबूत करता है।
साथियों बात अगर हम जब चेटीचंड और ईद-उल-फितर जैसे दो महत्वपूर्ण पर्व एक ही समय पर आते हैं, तो यह भारत की गंगा-जमुनी तहजीब का



जीवंत उदाहरण बन जाता है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे के त्योहारों में भाग लेते हैं, शुभकामनाएं देते हैं और आपसी प्रेम को बढ़ाते हैं। यह परंपरा केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्वभर में बसे भारतीय और सिंधी समुदाय भी इसे अपनाते हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सौहार्द को बढ़ावा मिलता है। इस अवसर की महत्ता को देखते हुए भारत के कई राज्यों मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सार्वजनिक या क्षेत्रीय अवकाश घोषित किया गया है। कुछ स्थानों पर चैत्र शुक्लादि, गुड़ी पड़वा, उगादी और चेटीचंड को एक ही श्रेणी में रखते हुए 19 मार्च 2026 को भी अवकाश घोषित किया गया है। यह दर्शाता है कि भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था की विविध धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मान करती है और उन्हें प्रोत्साहित करती है। यह अवकाश केवल एक छुट्टी नहीं, बल्कि लोगों को अपने धार्मिक और सांस्कृतिक कर्तव्यों को निभाने, परिवार और समाज के साथ समय बिताने और अपने धर्म को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है। यह सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है।
साथियों बात अगर हम इस झुलेलाल जयंती महोत्सव चेटीचंड की करें तो, चेटी चंड सिंधियों द्वारा मनाये जाने वाला महत्वपूर्ण त्योहार है। हर साल इसे चैत्र शुक्ल पक्ष के दूसरे दिन मनाया जाता है। इस बार ये 20 मार्च 2026, को मनाया जाएगा। ज्योदातर ये त्योहार गुड़ी पड़वा व उगड़ी के दूसरे दिन पड़ता है, इसे पड़ोसी देश सहित विश्व के हर देश में मने रहने वाले सिन्धी भी मनाते हैं। इस दिन कुछ कई दिनों बाद पूरा नजर आती है, सभी

लोग जल देव की आराधना करते हैं। चेटीचंड त्योहार सिन्धी समाज द्वारा अपने इष्टदेव झुलेलाल जी की याद में मनाया जाता है। इस दिन सिन्धी समाज जल देव व झुलेलाल जी की पूजा अर्चना करता है, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, जुलूस निकाले जाते हैं। इस दिन प्रसाद के तौर पर उबले काले चने व मीठा भात श्रद्धा पूर्वक सबको दिया जाता है।
साथियों बात अगर हम झुलेलाल जयंती महोत्सव चेटीचंड मनाने के कारणों की करें तो सिन्धी समाज में जब अत्याचार बढ़ा है, तब तब भगवान ने अपने भक्तों के लिए धरती में जन्म लिया है। युगों से ये बात चली आ रही है, भारत देश में कई भगवान, साधु संत ने जन्म लिया और दुनियां को सही गलत में फर्क समझाया है। सभी समाज धर्म के भगवान पाप को खत्म करने के लिए इस धरती पर आये- राम, कृष्ण, अल्लाह येशु ऐसे ही कुछ नाम हैं। ऐसे ही एक और भगवान इस धरती पर आये, जिन्हें झुलेलाल नाम से जाना जाता है। इन्हें सिन्धी समाज का इष्टदेव कहा जाता है। ये हिन्दू जाति के भगवान वरुण का अवतार है, जिनका जन्म 10 वीं शताब्दी के आस पास हुआ था। कुछ लोग इन्हें सूफी संत भी बोला करते हैं, जिन्हें मुस्लिम भी काफी पूजते थे। कुछ लोग इन्हें जल देव का अवतार मानते थे। सिन्धी घाटी की सबसे पहली व पुरानी सभ्यता मोहनजोदड़ो है, यही सिंध में ही झुलेलाल जी का जन्म हुआ था। उनके जन्म को आज भी सिन्धी समाज व पड़ोसी मुस्लिम के कुछ हिस्सों में लोग झुलेलाल जयंती या चेटी चंड नाम से मनाते हैं। इस दिन ने सिन्धी समाज का नया वर्ष शुरु होता है, जिसे वे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

साथियों बात कर हम सिंधी समाज के इष्टदेव झुलेलाल के जन्मयाने अवतरण की करें तो, सिंधी समाज पर हो रहे अत्याचार की पुकार सुन जल देवता से आकाशवाणी के 2 दिन बाद चैत्र माह की शुक्ल पक्ष में नासरपुर (पाकिस्तान की सिन्धी घाटी) के देवकी व ताराचंद के यहाँ एक बेटे ने जन्म लिया, जिसका नाम उदयचंद रखा गया। हिंदी में उदय का मतलब उगना होता है। भविष्य में ये छोटा बच्चा हिन्दू सिन्धी समाज का रक्षक बना, जिसने मिरक शाह जैसे शैतान का अंत किया अपने नाम को चरितार्थ करते हुए उदयचंद जी ने सिंध के हिंदुओं के जीवन के अंधेरे को खत्म कर उजयाला फैला दिया। पहले उन्हें भगवान का रूप नहीं समझा गया, लेकिन अपने जन्म के बाद ही वे चमत्कार रकता है या पानी में तैरता है। बाल्यावस्था में उदयचंद को झुला बहुत पसंद था, वे उसी पर विश्वास करते थे, और उनको भगवान का रूप मानते थे, इसलिए कुछ लोग उन्हें अमरलाल भी कहते थे। झुलेलाल जी को उदरोलाल भी कहते हैं, संस्कृत में इसका मतलब है कि जो पानी के करीब रहता है या पानी में तैरता है। बाल्यावस्था में उदयचंद को झुला बहुत पसंद था, वे उसी पर विश्वास करते थे, इसी के बाद उनका नाम झुलेलाल पड़ गया, उनकी माता देवकी उन्हें प्यार से झुल्लण बोलती थी, उनकी माता का देहांत छोटी उम्र में ही हो गया था, जिसके बाद उनका पालन पोषण सौतेली माँ ने ही किया। बता दें एक अन्याई राजा द्वारा हिंदुओं पर जुल्म करना शुरु कर दिया था,

सभी हिंदुओं को बोला गया, कि उन्हें इस्लाम अपनाना होगा, नहीं तो उन्हें मार डाला जायेगा, ऐसे में सिंध के सभी हिन्दू बहुत घबरा गए, तब सभी हिंदुओं को सिन्धी के नदी के पास इकठ्ठे होने के लिए बुलावा भेजा गया हजारों की संख्या में लोग वहाँ इकठ्ठा हुए, सबने मिलकर जल देवता दरियाशाह की उपासना और प्रार्थना की, कि इस विपदा में वे उनकी मदद करें। सभी ने लगातार 40 दिनों तक तप किया, तब भगवान वरुण ने खुश होकर उन्हें आकाशवाणी के द्वारा बताया, कि वे नासरपुर में देवकी व ताराचंद के यहाँ जन्म लेंगे, वही बालक इनका रक्षक बनेगा।
साथियों बात अगर हम वैश्विक स्तर पर इस उत्सव को समझने की करें तो सिंधी समुदाय ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए जिस प्रकार से चेटीचंड को एक अंतरराष्ट्रीय उत्सव का रूप दिया है, वह अद्वितीय है। यह समुदाय जहाँ भी गया, वहाँ अपनी परंपराओं, भाषा और संस्कृति को जीवित रखा और स्थानीय समाज के साथ समन्वय स्थापित किया। झुलेलाल जयंती इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जो आज केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। इसके साथ ही ईद-उल-फितर का सार्वभौमिक संदेश करुणा, दान और भाईचारा-मानवता के लिए प्रेरणादायक है। यह हमें सिखाता है कि धर्म का मूल उद्देश्य मानव कल्याण, सामाजिक न्याय और प्रेम को बढ़ावा देना है। जब ये दोनों पर्व एक साथ मनाए जाते हैं, तो यह संदेश और भी प्रभावी हो जाता है कि विभिन्न आस्थाएं होते हुए भी हम एक साझा मानवता से जुड़े हुए हैं। आज के समय में, जब विश्व कई सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, ऐसे अवसर हमें एकता, सहिष्णुता और आपसी सम्मान की ओर प्रेरित करते हैं। चेटीचंड और ईद-उल-फितर का यह संगम हमें यह याद दिलाता है कि हमारी विविधता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है और इसे संजोकर रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।
अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वर्ष 2026 का यह समय केवल त्योहारों का उत्सव नहीं, बल्कि मानवता, संस्कृति और आध्यात्मिकता का महापर्व है। यह हमें सिखाता है कि चाहे हम किसी भी धर्म, भाषा या संस्कृति से जुड़े हों, हमारा मूल उद्देश्य प्रेम, शांति और सद्भाव को बढ़ावा देना होना चाहिए। साई झुलेलाल साहिब की कृपा और ईद-उल-फितर के पावन संदेश के साथ, यह आशा की जा सकती है कि यह विश्व और अधिक एकजुट, शांतिपूर्ण और समृद्ध बने।

औद्योगिक नगरी के समग्र विकास के लिए प्रशासन प्रतिबद्ध: डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बहादुरगढ़ में सुनी उद्यमियों की समस्याएं

परिवहन विशेष न्यूज

उद्यमियों की समस्याओं का होगा प्राथमिकता से समाधान : डीसी*

*बहादुरगढ़, 19 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि औद्योगिक नगरी बहादुरगढ़ के समग्र एवं सुलभ विकास के लिए जिला प्रशासन प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि उद्योगों का सुदृढ़ होना न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है, बल्कि रोजगार सृजन और क्षेत्रीय विकास में भी अहम भूमिका निभाता है। इसी उद्देश्य से प्रशासन द्वारा उद्यमियों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सुनकर उनका त्वरित एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया जा रहा है।

उपायुक्त गुरुवार को बहादुरगढ़ में आयोजित उद्यमी संवाद बैठक के दौरान औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों की समस्याएं सुन रहे थे। उन्होंने व्यापारियों से सीधा संवाद करते हुए उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना और सम्बंधित अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए। इस दौरान एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच भी उपस्थित थे।

इस बीच डीसी ने पुराना उपमंडल सचिवालय परिसर और जिमखाना क्लब के दौरा किया।

बैठक में उद्यमियों ने डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल को अपनी समस्याओं से अवगत



कराया। डीसी ने संबंधित विभागों—बिजली निगम, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, नगर परिषद, लोक निर्माण विभाग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पुलिस विभाग एवं श्रम विभाग—के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी समस्याओं का विभागावार संज्ञान लेकर उनका समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक शिकायत की मॉनिटरिंग की जाएगी और लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि औद्योगिक क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण अभियान चलाया जाए, ताकि समस्याओं की पहचान मौके पर ही हो सके और उनका तत्काल समाधान

किया जा सके। उपायुक्त ने कहा कि बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए विशेष कार्ययोजना तैयार की जाए, जिसमें सड़क मरम्मत, जल निकासी, सफाई व्यवस्था एवं स्ट्रीट लाइट जैसी सुविधाओं को प्राथमिकता दी जाए।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि प्रशासन और उद्योग जगत के बीच मजबूत समन्वय स्थापित करना समय की आवश्यकता है। इसके लिए नियमित अंतराल पर बैठकें आयोजित की जाएंगी, ताकि संवाद बना रहे और समस्याओं का समाधान समय पर बैठकें आयोजित की जाएंगी, ताकि संवाद बना रहे और समस्याओं का समाधान समय

उन्होंने विश्वास दिलाया कि जिला प्रशासन बहादुरगढ़ को एक आदर्श औद्योगिक हब के रूप में विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास करेगा और उद्योगों से संबंधित सभी समस्याओं का समाधान पारदर्शी, समयबद्ध एवं प्रभावी तरीके से किया जाएगा।

इस अवसर पर बीसीसीआई के अध्यक्ष सुभाष जगगा, महासचिव नरेंद्र ठिकार, पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन अनिल रोहिल्ला, ईओ संजय रोहिल्ला, एचएसवीपी के ईओ विजय राठी, आरटीए राजेश मलिक, जिला उद्योग केंद्र के अधिकारी गण, बीसीसीआई और कोबी के समस्त पदाधिकारी और विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

नवरात्रि के दौरान माता दुर्गा जी धरती लोक पर आकर भक्तों के कष्टों को दूर करती है- बजरंग गर्ग



परिवहन विशेष न्यूज

माता दुर्गा जी की पूजा करने से भक्तों के घर में सुख-शांति व खुशहाली बनी रहती है- बजरंग गर्ग

नवरात्रि का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है- बजरंग गर्ग

हरियाणा/हिसार(राजेश सलुजा) :- श्री प्रयागिरी शिवालय मंदिर ट्रस्ट में चैत्र नवरात्रि पर माता दुर्गा जी की पूजा पर अखंड ज्योत संस्था के प्रधान बजरंग गर्ग ने जलाई। जिसमें भारी संख्या में धर्म प्रेमियों ने अपनी-अपनी अलग अखंड ज्योत जलाई। संस्था के प्रधान बजरंग गर्ग ने संबोधित करते हुए कहा कि नवरात्रि के दौरान माता

दुर्गा जी धरती लोक पर आकर भक्तों के कष्टों को दूर करती है। माता दुर्गा जी की पूजा करने से भक्तों के घर में सुख-शांति व खुशहाली बनी रहती है। शिवालय ट्रस्ट में हर रोज सुबह व शाम माता जी के पूजा का कार्यक्रम लगातार 9 दिन तक चलेगा और नौवें दिन दुर्गा माता जी की अलग-अलग अवतारों में पूजा होगी। जिससे मन और आत्मा की शुद्धि होती है। नवरात्रि का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। पूरे देश में यह त्यौहार बड़े धूमधाम से 9 दिनों तक मनाया जाता है। चैत्र नवरात्रि देवी शक्ति की उपासना का पर्व है, जो वसंत ऋतु के आरंभ और हिंदू नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। हिंदू पंचांग के अनुसार यह चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से

शुरू होता है और कई क्षेत्रों में इसे हिंदू नववर्ष का प्रारंभ माना जाता है। बजरंग गर्ग ने कहा कि नवरात्रि के त्यौहार पर कलाकारों द्वारा 23 मार्च को भव्य भजन समारोह का कार्यक्रम होगा। इस अवसर पर पवन रालवासिया, नारायण दास बंसल, कैलाश चौधरी, सुरेंद्र सिंगला, प्रवीण जैन, ओमप्रकाश असीजा, जगत नारायण, सत्येंद्र गोयल, रमेश पटवारी, प्रतीक एलाहाबादी, जय गोपाल घेरा, प्रेम कुमार कुकरेजा, महेंद्र भाटिया, गगन वल्लेचा, राकेश सैनी, संजय वलेचा, मुकेश मेहरिया, दीपक कुमार, मनोष चवला, सुराम वर्मा, सुनील शर्मा, श्रीमती अंगुली देवी, अनीता गर्ग, ऊषा गर्ग आदि भक्त जन भारी संख्या में मौजूद रहे।

समाधान शिविरों से प्राप्त समस्याओं का हो त्वरित समाधान - डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बहादुरगढ़ में आयोजित समाधान शिविर

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 19 मार्च। स्थानीय लघु सचिवालय परिसर में गुरुवार को डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में समाधान शिविर का आयोजन हुआ।

उपायुक्त ने आमजन की शिकायतें सुनते हुए अविरोध समाधान के निर्देश दिए। समाधान शिविर में एसडीएम अभिनव सिवाच उपस्थित रहे।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने नागरिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। शिविर में कुल 20 शिकायतें दर्ज की गईं। इनमें परिवार पहचान पत्र (पीपीपी), पेंशन, नगर परिषद, पुलिस विभाग, शिक्षा विभाग, फायर विभाग, लोक निर्माण विभाग तथा भूमि से

संबंधित शिकायतें प्रमुख रूप से शामिल रहीं। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी शिकायतों का समाधान प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध रूप से सुनिश्चित किया जाए तथा प्रत्येक मामले में पारदर्शिता और संवेदनशीलता बरती जाए। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर प्रशासन और आमजन के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर रहे हैं, जिनके माध्यम से नागरिकों को एक ही स्थान पर विभिन्न विभागों की सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान संभव हो रहा है।

उन्होंने कहा कि इस पहल से न केवल लोगों की समस्याओं का शीघ्र निवारण हो रहा है, बल्कि प्रशासन के प्रति आमजन का

विश्वास भी सुदृढ़ हो रहा है, जो सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी प्रकार अतिरिक्त उपायुक्त जगनवास ने झज्जर में, एसडीएम रेणुका नांदन ने बेरी में व एसडीएम डॉरमन गुप्ता ने बादली में लोगों की समस्याएं सुनी और मौके पर समाधान किया।

इस अवसर पर एसीपी प्रदीप खत्री, तहसीलदार सुदेश मेहरा, नायब तहसीलदार प्रवीण कुमार, बीडीपीओ सुरेंद्र खत्री, सीएमओ डॉ. मंजू कादयान, डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल लोक निर्माण विभाग के अनिल रोहिल्ला, ईओ नगर परिषद संजय रोहिल्ला, संजीव सैनी, संजीव सैनी प्रदेश संयोजक (लाभार्थी योजना) सहित संबंधित अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।



ट्रैक्टरों का आज होगा भौतिक सत्यापन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 19 मार्च। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा की एसबी-89 योजना के तहत जिला के चयनित किसानों के ट्रैक्टरों का भौतिक सत्यापन शुक्रवार 20 मार्च को किया जाएगा। यह सत्यापन सहायक कृषि अभियंता कार्यालय, झज्जर में प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक किया जाएगा।

सहायक कृषि अभियंता राजीव चावला ने बताया कि इस योजना के तहत 15 जनवरी 2026 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए थे। इस दौरान अनुसूचित श्रेणी के कुल 222 किसानों ने आवेदन किया था।

उन्होंने बताया कि प्राप्त आवेदनों में से 20 फरवरी को ऑनलाइन डा के माध्यम से 11 किसानों का चयन किया गया। चयनित किसानों द्वारा अपने-अपने ट्रैक्टर के बिल विभागीय पोर्टल पर अपलोड किए जा चुके हैं। अब निदेशालय के निर्देशानुसार इन चयनित किसानों के ट्रैक्टरों का भौतिक सत्यापन किया जाएगा, जिसके बाद योजना के तहत अनुदान जारी करने की आगे की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

उन्होंने चयनित किसानों से निर्धारित तिथि व समय पर सहायक कृषि अभियंता कार्यालय, झज्जर में अपने ट्रैक्टर सहित उपस्थित होने का आह्वान किया है, ताकि भौतिक सत्यापन की प्रक्रिया समयबद्ध ढंग से पूर्ण की जा सके।

चैत्र नवरात्र: कानपुर के देवी मंदिरों में गूँजे मां के जयकारे, उमड़ी भक्तों की भीड़

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहाँ आज गुरुवार को माता के नवरात्र के पहले दिन शहर के प्रमुख दुर्गा मंदिरों के साथ ही छोटे मंदिरों में भी भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। इस दौरान दुर्गा मंदिरों में 'अमृत की बरसे बदरिया अम्बे मां की दुआरिया।' आदि भजन गूंजायमान होते रहे। गुरुवार का दिन होने के कारण जंगली देवी मंदिर, काली मठिया शास्त्री नगर, बारादेवी किदवई नगर, तपेरी देवी बिरहाना रोड, फूलमती मंदिर जनरल गंज, वैष्णो देवी मंदिर बरौ, चंद्रिका देवी मंदिर, शीतला माता मंदिर चौक, दुर्गा मंदिर गोविंद नगर सहित शहर के प्रमुख दुर्गा मंदिरों में छात्र-छात्राओं की अच्छी-खासी संख्या देखी गयी। अपने माता-पिता व दोस्तों के साथ मां के द्वारे पहुंचे इन भक्तों ने मां से परीक्षा में पास होने की कामना की। इसी के साथ माता को प्रसाद, नारियल, फूल-मालाएं व चुनरी चढ़ाकर मुरादे मांगीं।

वहीं मंदिरों में लगने वाले पारम्परिक मेले में खूब भीड़ दिखायी दी। महिलाओं ने जमकर खरीदारी की। इस दौरान माता के दरबार में भजन-कीर्तन गूंजते रहे। जागरण का आयोजन हुआ। मन्तने पूरे होने पर बारादेवी मंदिर व काली मठिया मंदिर आदि मंदिर में भक्तगण नंगे पांव चलकर आये।



इसी क्रम में ऐतिहासिक महत्व के देवी मंदिरों में गुरुवार को सुबह से ही पूजन की थाली के साथ महिलाओं व श्रद्धालुओं की कतारें लग गईं। अकबरपुर के कालिका देवी मंदिर, मूसानगर के मुक्तेश्वरी मंदिर, कथरी के कात्यायनी देवी स्थित, लाला भगत के कौमारी देवी मंदिर व लमहरा के मां परहल देवी मंदिर में पर खुलते ही श्रद्धालुओं ने जयकारों के साथ पूजन अर्चना किया।

इसके साथ ही नारियल, चुनरी, फूल, मिष्ठान का भोग लगाकर रोग शोक से मुक्ति के साथ मनवांछित फल

की कामना की। इसी तरह ज्योती गांव स्थित बगलामुखी मंदिर, शिवली के पंथामाता मंदिर, रूरा के पाथामाई मंदिर व दुर्गा मंदिर के अलावा हथिका मैथा के सम्मोहनी माता मंदिर में पहुंचे श्रद्धालुओं ने जयकारों के साथ आदिशक्ति के प्रथम स्वरूप शैलपुत्री का पूजन किया। इसके साथ ही नारियल, चुनरी, फूल, मिश्री, व पंचामृत का भोग लगाकर सुख-समृद्धि व रोग शोक से मुक्ति के साथ मनवांछित फल की कामना की। जबकि घरों में घंट स्थापित कर लोगों ने व्रत और पूजा पाठ किया।

जनगणना 2027 की तैयारियां तेज, जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर स्थित संवाद भवन में 3 दिवसीय प्रशिक्षण में 34 फील्ड ट्रेनर ले रहे भाग

झज्जर, 19 मार्च। प्रदेश भर में जनगणना 2027 को लेकर तैयारियां तेज कर दी गई हैं। इसी क्रम में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के कुशल मार्गदर्शन में गुरुवार से जनगणना विभाग द्वारा 3 दिवसीय फील्ड ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हो चुका है। आगामी 21 मार्च तक संवाद भवन सभागार में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चलेगा।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि जनगणना देश का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, जिसके आधार पर सरकार की नीतियां और विकास योजनाएं तय होती हैं। उन्होंने कहा कि फील्ड ट्रेनर की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही प्रशिक्षक आगे प्रणकों और पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। उन्होंने कहा कि आज प्राप्त किया जा रहा प्रशिक्षण जनगणना कार्य की सफलता के लिए मील का



पत्थर साबित होगा। जितना बेहतर प्रशिक्षण फील्ड स्तर तक पहुंचेगा, जनगणना का कार्य उतना ही प्रभावी और त्रुटिरहित होगा। उन्होंने बताया कि जनगणना 2027 के प्रथम चरण के तहत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य 01 मई 2026 से 30 मई 2026 तक 30 दिनों की अवधि में किया जाएगा। इससे पूर्व 16 अप्रैल 2026 से 30 अप्रैल

2026 तक नागरिकों को 'जनगणना पोर्टल' के माध्यम से ऑनलाइन स्व-गणना की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जाएगी, जिससे लोग स्वयं अपने परिवार की जानकारी दर्ज कर सकेंगे। इसके पश्चात दूसरे चरण में फरवरी 2027 के दौरान जनसंख्या गणना का कार्य किया जाएगा। प्रथम चरण के बाद प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण चार्ज स्तर

पर आयोजित किया जाएगा, ताकि फील्ड स्तर पर कार्य पूरी तरह व्यवस्थित और सुचारु रूप से संपन्न हो सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनगणना से जुड़े सभी कार्यों को पूर्व तैयारी सुनिश्चित की जाए तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक स्तर पर स्पष्ट निर्देश और

तकनीकी जानकारी उपलब्ध हो, ताकि किसी प्रकार की त्रुटि की संभावना न रहे।

दूसरी ओर सीटीएम नमिता कुमारी ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा जनगणना कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि यह महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान निर्धारित समयसीमा में पारदर्शिता, सटीकता और दक्षता के साथ पूरा किया जा सके।

सीटीएम ने बताया कि इस जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में 34 फील्ड ट्रेनर भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान मास्टर ट्रेनर डॉ. ललित कुमार व जसबीर सिंह द्वारा जनगणना 2027 के निर्धारित मानकों के अनुरूप विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसमें मकान सूचीकरण, परिवार विवरण, डिजिटल डेटा संकलन, मोबाइल एप के उपयोग तथा फील्ड में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों से निपटने के तरीकों की जानकारी दी जा रही है।

बेरी में बिजली उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक आज

बेरी (झज्जर), 19 मार्च। बिजली निगम डिवीजन बेरी के उपभोक्ताओं की बिजली से संबंधित शिकायतों के निवारण के लिए 20 मार्च शुक्रवार को बिजली अदालत और उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक की आयोजित की जाएगी। एसडीओ सुनील कुमार ने बताया कि बैठक उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएनएल) के बेरी कार्यालय में सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि बैठक में बिजली उपभोक्ताओं की बिजली बिल, कनेक्शन, लोड संबंधित समस्याओं को सुना जाएगा और उनका मौके पर ही समाधान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कोई उपभोक्ता फैंसले से संतुष्ट नहीं है तो वह अपनी शिकायत अध्यक्ष अभियंता झज्जर के समक्ष रख सकता है।



मेरा छोटा ट्रैक्टर

छोटा सा ट्रैक्टर हमारा है, मुझको बहुत ये प्यारा है।

धीरे-धीरे इसे घुमाऊँ।

लाल-हरा रंग इसका है, देखो कितना न्यारा है।

कभी रुकाऊँ, कभी चलाऊँ, खेल-खेल में सीख भी जाऊँ।

आगे-पीछे चलता जाए, घर में ही खेत बन जाए।

मेरा प्यारा खेल-खिलौना, इससे अच्छा कुछ ना होना।

मैं भी इसके संग खेलूँ, हँसूँ-गाऊँ, खुशियाँ ले लूँ।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

नन्हे हाथों से चलाऊँ,

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

मथुरा में 20 मार्च को निकलेगी भगवान झूलेलाल की भव्य शोभायात्रा



वरुणावतार झूलेलाल महाराज



चेटीचण्ड पर्व को भव्य बनाने में देर रात तक जुटे रहे बच्चे - बड़े सिंधीजन

मथुरा। अखंड भारत की प्राचीन सिंधु संस्कृति का अमर पर्व चेटीचण्ड चैत्र शुक्ल द्वितीय को सिंधी समुदाय के इष्टदेव भगवान झूलेलाल का जन्मोत्सव के साथ मनाया जायेगा। गत एक पखवाड़े से बच्चे, बड़े हर उम्र के सिंधीजन तैयारियों में जुटे रहे।

सिंधी उत्सव के मुख्य संयोजक रामचंद्र खत्री ने बताया कि वरुणावतार भगवान झूलेलाल के जन्मोत्सव पर सिंधी जनरल पंचायत के तत्वावधान में 20 मार्च शुक्रवार को दोपहर 12 बजे से होलीगेट स्थित अप्सरा पैलेस में गीत - भजन संग विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित किया जाएगा और सायं 5 बजे भगवान झूलेलाल की भव्य शोभायात्रा शहर में निकाली जायेगी।

चेटीचण्ड महोत्सव एक नई उमंग, नया उत्साह, नई चेतना लाता है। पंचायत अध्यक्ष नारायणदास लखवानी के अनुसार चेटीचण्ड एक राष्ट्रीय त्यौहार है, भारत के अनेक प्रदेशों में इस दिन राजकीय अवकाश रहता है। समूचे सिंधी समुदाय में

चेटीचण्ड पर्व को लेकर भारी उत्साह है। सजातीय लोग अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर झूलेलाल जन्मोत्सव में सपरिवार भाग लेंगे।

चेटीचण्ड महोत्सव का न्योता देने के लिए जहाँ सिंधी जनरल पंचायत के पदाधिकारी सबको निमंत्रण पत्र दे रहे हैं, वहीं सिंधी समाज के उत्साही युवा मीडिया प्रभारी किशोर इसरानी तथा सिंधी नवयुवक मंडल और महिला मंडल से जुड़े सदस्य प्रचार प्रसार में बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। घर - दूकान और वाहनों पर भगवान झूलेलाल के फोटो स्टिकर भी लगाए जा रहे हैं। दूसरी ओर प्रसिद्ध नाटककार लोखिका चंद्रा खत्री के निर्देशन में बच्चों ने सिंधी संस्कृति को बढ़ावा देने वाली प्रस्तुतियों के लिए अभ्यास गुरूवार देरसाय तक जारी रखा।

वरुणदेव के अवतार हैं भगवान झूलेलाल मथुरा। भगवान झूलेलाल के जीवन पर शोध कर चुके लेखक किशोर इसरानी ने बताया कि संवत् 1007 (सन्-951 ई०) को जन्में भगवान झूलेलाल ने अवतरण के बाद मात्र 13 वर्ष तक की उम्र तक ही सिंधी समुदाय का मार्गदर्शन किया। झूलेलालसाई संवत् 1020 (सन्-964ई०) के भाद्र पद शुक्ल चतुर्विंशी

पर जल समाधि लेकर अंतर्धान हो गए। आज भी लालसाई की ज्योति जगमग रहती है जो भगवान झूलेलाल की मौजूदगी का अहसास कराती है।

सिंधी समुदाय के लिये चेटीचण्ड का विशेष महत्व है क्योंकि इसी दिन उन्हें अत्याचारी शासक के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिये वरुणदेव के अवतार उडेरालाल झूलेलाल ने हैदराबाद (सिंध) के नसरपुर में भक्त रतनराय के घर जन्म लिया था। भगवान झूलेलाल के जन्म से पूर्व तत्कालीन भारत के सिंध प्रांत में एक ऐसे शासक का शासन था। जिसने अपने वजीर के बहकावे में आकर हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करने के लिये अत्याचार करना शुरू कर दिया। जब अत्याचार असहनीय हो गए तब सारे हिंदु एकत्रित होकर सिंधु नदी के किनारे प्रभु को पुकारने लगे। भक्तों को संकट में देख भगवान ने विशाल मछली पर दिव्य पुरुष के रूप में दर्शन देकर, रक्षा करने का वचन दिया।

किशोर इसरानी ने बताया कि भगवान झूलेलाल ने जन्म लेकर पापियों का संहार नहीं किया बल्कि उनका हृदय परिवर्तन करके उन्हें प्रेम, शान्ति सौहार्द सद्भाव, एकता व अखण्डता का संदेश दिया था।

श्रीराधा रानी के परमभक्त थे निकुंज लीला प्रविष्ट सन्त विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा)

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौरा नगर कॉलोनी (चार सम्प्रदाय आश्रम के पीछे) स्थित स्नेह माधुरी कुंज में प्रख्यात सन्त नित्य लीला प्रविष्ट विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) की स्मृति में विराट संत-विद्वत् सम्मेलन अत्यन्त एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसके अंतर्गत समस्त संतों, विद्वानों, धर्माचार्यों, भक्तों-श्रद्धालुओं व शिष्य परिकर के द्वारा सन्त प्रवर विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) का पावन स्मरण करके उन्हें वाक पष्पांजलि अर्पित की गई। सर्वप्रथम आचार्य नरोत्तम प्रसाद चतुर्वेदी व आचार्य पुरुषोत्तम शास्त्री द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।

तत्पश्चात् चिंतामणि कुंज के अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद गिरि महाराज एवं चतुःसंप्रदाय के श्रीमहंत बाबा फूलडोल बिहारीदास महाराज ने कहा कि निकुंजवासी विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) अत्यन्त सहज, सरल, उदार व परोपकारी सन्त थे। उन्होंने अपना समूचा जीवन गौ, सन्त, विप्र, ब्रजवासी व निर्धन-निराश्रित आदि की सेवा में व्यतीत किया। उन जैसे संतों से ही पृथ्वी पर धर्म व अध्यात्म का अस्तित्व है।

अध्यक्षाता करते हुए चार सम्प्रदाय आश्रम के महंत ब्रजबिहारी दास महाराज एवं महंत रामस्वरूप दास महाराज ने कहा कि निकुंज लीला प्रविष्ट सन्त विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) श्रीराधा रानी के परम भक्त थे। पूज्य महाराजश्री ने अपनी साधना की शक्ति से कई बार प्रभु की निकुंज लीलाओं का दर्शन किया।

पूज्य महाराजश्री की परम-कृपापात्र शिष्या साध्वी मीरा बहिनजी एवं प्रख्यात साहित्यकार रघूपुर रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि हमारे सदगुरुदेव विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) ने श्रीधाम वृन्दावन में केठोर साधना करते हुए कई वर्षों तक मौन



व्रत धारण किया था। इसीलिए उन्हें मौनी बाबा के नाम से जाना जाता है।

बड़ी छावनी आश्रम के महंत रामकल्याण दास महाराज एवं संस्कृत के परम विद्वान आचार्य नेत्रपाल शास्त्री ने कहा कि सन्त विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) परम भजनानंदी व निस्पृह संत थे। उन जैसे संतों से ही सनातन धर्म और भारतीय वैदिक संस्कृति पल्लवित व पोषित होती है।

अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा के

महाराज, सन्त प्रवर रामदास महाराज, प्रमुख शिक्षाविद् जगदीश नीलम, संगीताचार्य पंडित देवकीनंदन शर्मा, महंत श्याम दास महाराज, महंत श्रीहित गोविन्द शरण महाराज, आचार्य विष्णु मोहन नागाच, आचार्य रामनिवास शुक्ला, भगवताचार्य हरि भारद्वाज महाराज, गंगा मंदिर के सेवायत व र बांसुरी संस्था के अध्यक्ष विनय गोस्वामी, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य सुदामा शास्त्री, पण्डित मोहन वल्लभ शर्मा, बाबा गिरांज सिंह, मनोज शास्त्री, महावीर प्रसाद शास्त्री, पुरुषोत्तम शरण महाराज, लालजी महाराज, दीनदयाल खंडेलवाल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन प्रख्यात साहित्यकार रघूपुर रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया।

महोत्सव में प्रमुख रूप से सुकेश खंडेलवाल, कुशलेश खंडेलवाल, बसंत कुलकर्णी, ललित कुलकर्णी (भोपाल), मुरली दास महाराज, सुखदेव दास महाराज (काकाजी) आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

एनएसएस सात दिवसीय विशेष शिविर का भव्य शुभारंभ

गोरखपुर। गंगोत्री देवी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ अत्यंत गरिमामय, प्रेरणादायी एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण अवसर पर महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक इंजी. आशुतोष मिश्र ने दीप प्रज्वलित कर शिविर का विधिवत उद्घाटन किया। उद्घाटन अवसर पर अपने प्रेरक उद्बोधन में इंजी. आशुतोष मिश्र ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक शैक्षणिक गतिविधि नहीं, बल्कि यह युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि "सेवा ही वह आधार है, जो व्यक्ति को महान बनाती है और समाज को सशक्त करती है।" उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि वे इस सात दिवसीय शिविर को आत्मविकास, सामाजिक उत्तरदायित्व और नेतृत्व क्षमता के विकास का अवसर मानते हुए पूर्ण



समर्पण के साथ सहभागिता करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. गौरी पांडेय ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों में अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना का विकास करती है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा तभी सार्थक होती है, जब वह समाज के कल्याण में योगदान दे। उन्होंने छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे शिविर के माध्यम से समाज के वास्तविक स्वरूप को समझें और उसमें सकरात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प लें। कार्यक्रम अधिकारी

डॉ. प्रत्या उपाध्याय एवं डॉ. प्रियंका त्रिपाठी ने शिविर की विस्तृत कार्ययोजना प्रस्तुत करते हुए बताया कि सात दिनों तक विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसके अंतर्गत छात्रांग गौंवां एवं आस-पास के क्षेत्रों में जाकर स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य जागरूकता, शिक्षा प्रसार, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर खतरों में डालकर उनकी रक्षा की जायेगी।

उप निरीक्षक सत्येंद्र सिंह को किया जाएगा सम्मानित



परिवहन विशेष न्यूज

उप निरीक्षक सत्येंद्र सिंह को उनकी बहादुरी और कर्तव्य निष्ठा के लिए सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बरेली जयपुर एक्सप्रेस पर एक स्कूल बस में आग लगने की घटना में 38 स्कूल बच्चों को सुरक्षित निकालकर अपनी जान को खतरों में डालकर उनकी रक्षा की। विनोद दीक्षित, संस्थापक

अध्यक्ष, बुज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति ने कहा कि सत्येंद्र सिंह की इस बहादुरी और कर्तव्य निष्ठा के लिए उन्हें समिति की तरफ से सम्मानित किया जाएगा। सत्येंद्र सिंह की इस बहादुरी की सराहना की जा रही है और उन्हें सच्चे देशभक्त का परिचय देने के लिए सम्मानित किया जाएगा।

सीआरपीएफ दिवस पर 47 बटालियन मुख्यालय में श्रद्धांजलि व सैनिक सम्मेलन

परिवहन विशेष न्यूज

गयाजी। जेल परिसर स्थित 47 बटालियन सीआरपीएफ मुख्यालय में सीआरपीएफ दिवस के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर 47 बटालियन के कमांडेंट अवधेश कुमार ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीद जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मौके पर डिप्टी कमांडेंट उत्तम कुमार, सहित अधिकारी, अधिनस्थ अधिकारी व जवान मौजूद थे। कार्यक्रम के दौरान सैनिक सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें जवानों के मनोबल को बढ़ाने और उनकी समस्याओं के समाधान पर विशेष चर्चा की गई।

इस अवसर पर कमांडेंट अवधेश कुमार ने सभी अधिकारियों एवं जवानों को सीआरपीएफ दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश की आंतरिक सुरक्षा की रीढ़ है। उन्होंने कहा कि बल के जवान हर परिस्थिति में साहस, अनुशासन और समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। उन्होंने शहीदों के बलिदान को याद करते हुए जवानों से उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं जवानों ने राष्ट्र की सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।



एडीएम डॉ. पंकज कुमार के नेतृत्व में विशेषज्ञों ने जांची संभावनाएं, तैयार होगा 'सिटी हीट एक्शन प्लान'

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। जनपद में आगामी भीषण गर्मी और लू (होटवेव) के प्रकोप से निपटने के लिए प्रशासन ने वैज्ञानिक स्तर पर पुख्ता रणनीति तैयार कर ली है। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) डॉ. पंकज कुमार के प्रभावी नेतृत्व एवं जिला आपदा विशेषज्ञ पूजा राणा के कुशल मार्गदर्शन में जनपद का 'सिटी हीट एक्शन प्लान' तैयार करने की प्रक्रिया तेज हो गई है। इसी क्रम में नेशनल पी.जी. कॉलेज, लखनऊ के भूगोल, रिमोट सेंसिंग एवं जीआईएस विभाग की एक उच्च स्तरीय टीम ने मथुरा के विभिन्न संवेदनशील सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक स्थलों का सघन भौतिक सर्वेक्षण किया।

17 से 18 मार्च तक चले इस दो दिवसीय दौरे के दौरान विशेषज्ञ टीम ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय, मुख्य अग्निशमन अधिकारी कार्यालय, तहसील सदर, नगर निगम, और वृद्धा आश्रम जैसे महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा किया। सर्वेक्षण के दौरान टीम ने इन क्षेत्रों पर उपलब्ध संसाधनों का जायजा लिया और तापमान नियंत्रण के साथ-साथ लू से बचाव के उपायों पर डेटा संकलित किया।

सर्वेक्षण के पश्चात् कलेक्ट्रेट स्थित ईओसी सेंटर पर विशेषज्ञों ने जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। इस बैठक में आपदा मित्र अशोक यादव अपनी टीम के साथ मौजूद रहे और स्थानीय स्तर पर



आपदा प्रबंधन के अनुभवों को साझा किया। डॉ. पंकज कुमार के मार्गदर्शन और पूजा राणा की देखरेख में हुई इस चर्चा में शहर के हॉटस्पॉट्स पर पेयजल की मुकम्मल व्यवस्था,

शेडरूम का निर्माण, मियावाकी पद्धति से हरित पट्टी का विकास और कुलिंग तकनीकों के प्रयोग पर विशेष जोर दिया गया। लखनऊ से आई इस टीम की विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर

मथुरा के लिए एक प्रभावी 'सिटी हीट एक्शन प्लान' लागू किया जाएगा, जिससे भविष्य में लू से होने वाली जनहानि और स्वास्थ्य समस्याओं को न्यूनतम किया जा सके।

प्रकृति, पानी और आधुनिक मनुष्य

प्रकृति मानव जीवन का सबसे बड़ा उपहार है। वायु, मिट्टी, वृक्ष और जल— ये सभी प्रकृति के अमूल्य उपहार हैं जो मानव जीवन को संभव बनाते हैं। इनमें से पानी ही जीवन का मूल आधार है। लेकिन वर्तमान में मानवीय प्रगति के नाम पर प्रकृति और जल के साथ हो रही लापरवाही चिंताजनक होती जा रही है।

प्रकृति और पानी का महत्व पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत पानी से हुई मानी जाती है। मानव शरीर का अधिकांश भाग भी पानी से बना होता है। कृषि, उद्योग, घरेलू जीवन और पर्यावरण में पानी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नदियों, झीलों, कुओं और वर्षा के जल हमारे जीवन को चलाते हैं।

प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए जंगलों, नदियों और मिट्टी का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। जब प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है तो सूखा, बाढ़ें और मौसम परिवर्तन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

आज के मनुष्य की सोच प्रौद्योगिकी और आधुनिकता की दौड़ में आजका मनुष्य प्रकृति के साथ अपने संबंध को भूल रहा है। औद्योगिकरण, बड़े शहरों का विस्तार और जंगलों की कटाई ने प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत बड़ा दबाव डाला है।

जल संसाधनों का अत्यधिक



उपयोग, नदियों में गंदगी छोड़ना और भूजल की अधिकता आज बड़ी समस्या बन गई है। कई स्थानों पर पानी का स्तर लगातार गिर रहा है, जो भविष्य के लिए एक गंभीर संकेत है।

जल संकट और प्रदूषण आज दुनिया के कई देशों में पीने योग्य स्वच्छ पानी की कमी महसूस हो रही है। औद्योगिक गंदगी, रासायनिक खाद और प्लास्टिक कचरा जल संसाधनों को प्रदूषित कर रहा है। इससे न केवल मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है, बल्कि जल-जीवन भी खतरे में पड़ जाता है।

समाधान और दायित्व इस समस्या का समाधान न केवल सरकारों द्वारा, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी से संभव है। हमें जल संरक्षण की आदत विकसित करनी चाहिए। वर्षा के पानी को संचालना, वृक्षारोपण करना और नदियों तथा झीलों को साफ रखना समय की आवश्यकता है।



वह छिपी हुई तकनीक जो अंततः प्यूजन पावर को कारगर बना सकती है

डॉ. विजय गर्ग

दशकों से, परमाणु संलयन को ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत माना जाता रहा है। प्यूजन— वह प्रक्रिया जो सन— को शक्ति प्रदान करती है। इसमें लगभग असीमित, स्वच्छ और सुरक्षित बिजली उपलब्ध कराने की क्षमता है। यह परंपरिक परमाणु विखंडन की तुलना में कोई ग्रीनहाउस गैस और बहुत कम दीर्घकालिक रेडियोधर्म अपशिष्ट पैदा नहीं करता है। फिर भी भारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद, संलयन शक्ति को व्यावहारिक बनाना अत्यंत कठिन बना हुआ है। आज, वैज्ञानिकों का मानना है कि अपेक्षाकृत गुप्त प्रौद्योगिकी— उन्नत प्लाज्मा निदान प्रणालियाँ अंततः वाणिज्यिक संलयन ऊर्जा के मार्ग को खोलने में मदद कर सकती हैं।

प्यूजन पावर को समझना संलयन तब होता है जब हल्के परमाणु नाभिक, जैसे हाइड्रोजन समस्थानिक, मिलकर एक भारी नाभिक बनाते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान, आइंस्टीन के समीकरण के अनुसार द्रव्यमान की एक छोटी मात्रा ऊर्जा की एक विशाल मात्रा में परिवर्तित हो जाती है।

हालाँकि, पृथ्वी पर संलयन को संभव बनाने के लिए वैज्ञानिकों को तारों के अंदर की स्थितियों के समान परिस्थितियाँ पुनः निर्मित करनी होंगी। ईंधन को 100 मिलियन डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर गर्म किया जाना चाहिए, जिससे पदार्थ की ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जिसे प्लाज्मा कहा जाता है। इस प्लाज्मा को शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र का उपयोग करके सीमित किया जाना चाहिए ताकि यह रिएक्टर की दीवारों को न छू सके। यदि प्लाज्मा लंबे समय तक स्थिर रहता है, तो संलयन प्रतिक्रियाएं प्रणाली द्वारा उपभोग की जाने वाली ऊर्जा से अधिक ऊर्जा जारी कर सकती हैं।

इस अत्यंत गर्म प्लाज्मा को बनाए रखना और नियंत्रित करना संलयन अनुसंधान की केंद्रीय चुनौती है। **समस्या: रिएक्टर के अंदर अंधेरे में उड़ना** संलयन रिएक्टर के अंदर प्लाज्मा जटिल और अप्रत्याशित तरीके से कार्य करता है। छोटी-छोटी अस्थिरताओं के कारण प्लाज्मा कैद से बच सकता है, जिससे प्रतिक्रिया

तुरंत बंद हो जाती है। कई वर्षों तक वैज्ञानिकों को संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि वे इन चरम वातावरण में क्या हो रहा था, इसका सटीक अवलोकन नहीं कर पा रहे थे। सटीक माप के बिना, रिएक्टर की स्थिति को समायोजित करना गेज या सेंसर के बिना इंजन चलाने का प्रयास करने जैसा था।

शोधकर्ताओं का मानना है कि इस माप समस्या को हल करने से वाणिज्यिक संलयन ऊर्जा की दिशा में प्रगति नाटकीय रूप से तेज हो सकती है।

गुप्त प्रौद्योगिकी: उन्नत प्लाज्मा निदान बढ़ती ध्यान आकर्षित करने वाली छिपी हुई तकनीक उन्नत नैदानिक प्रणालियाँ हैं। उच्च तकनीक वाले उपकरण जो रिएक्टर के अंदर प्लाज्मा के तापमान, घनत्व, गति और व्यवहार को मापते हैं।

ये उपकरण प्यूजन मशीनों की आंखें और कानों के रूप में कार्य करते हैं। वे वैज्ञानिकों को निम्नलिखित कार्य करने की अनुमति देते हैं

वास्तविक समय में प्लाज्मा की स्थिति पर नजर रखें अस्थिरता के प्रारंभिक संकेतों का पता लगाएं

चुंबकीय क्षेत्र और ईंधन इंजेक्शन को तुरंत समायोजित करें

रिएक्टर प्रदर्शन को अनुकूलित करें दर्जनों शोधकर्ताओं से जुड़ी एक हालिया वैज्ञानिक रिपोर्ट में नैदानिक नवाचार को प्रयोगात्मक प्रयोगशालाओं से वाणिज्यिक बिजली संयंत्रों तक संलयन शक्ति लाने के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में से एक बताया गया है।

प्यूजन डायग्नोस्टिक्स को बढ़ाने वाली नई प्रौद्योगिकियाँ आधुनिक प्लाज्मा निदान प्रणालियाँ कई अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को जोड़ती हैं

1। अल्ट्रा-फास्ट सेंसर ये सेंसर एक सेकंड के दस लाख हिस्से में घटित होने वाली घटनाओं को कैद कर सकते हैं, जिससे यह पता चलता है कि संलयन प्रतिक्रियाओं के दौरान प्लाज्मा किस प्रकार विकसित होता है।

2। लेजर-आधारित माप उन्नत लेजर प्रतिक्रियाओं को वांछित किए बिना

प्लाज्मा घनत्व और तापमान निर्धारित करने में मदद करते हैं।

3। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग एआई नैदानिक डेटा की विशाल धाराओं का विश्लेषण करने में मदद करता है, जिससे वैज्ञानिक अस्थिरताओं का पूर्वानुमान लगा सकते हैं और व्यवधान उत्पन्न होने से पहले उन्हें ठीक कर सकते हैं।

4। डिजिटल ट्विन सिमुलेशन वास्तविक रिएक्टरों को प्रतिबिंबित करने वाले कंप्यूटर मॉडल शोधकर्ताओं को वास्तविक प्रणाली पर लागू करने से पहले आभासी रूप से समायोजन का परीक्षण करने की अनुमति देते हैं।

ये प्रौद्योगिकियाँ मिलकर प्लाज्मा को सटीक रूप से नियंत्रित करने के लिए आवश्यक विस्तृत फीडबैक प्रदान करती हैं। यह कुछ ऐसा है जिसकी प्यूजन शोधकर्ताओं में दशकों तक कमी रही थी।

वाणिज्यिक संलयन की ओर दौड़

कई प्रायोगिक रिएक्टर और निजी कंपनियाँ संलयन को एक व्यावहारिक ऊर्जा स्रोत में बदलने के लिए काम कर रही हैं। स्पार्क फ्यूजन रिएक्टर परियोजना जैसी परियोजनाओं का उद्देश्य अगले कुछ वर्षों के भीतर शुद्ध ऊर्जा उत्पादन करने में सक्षम रिएक्टरों का प्रदर्शन करना है।

साथ ही, नए डिजाइन, बेहतर सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट और उन्नत कम्प्यूटेशनल उपकरण वैज्ञानिकों को छोटे और अधिक कुशल प्यूजन डिवाइस बनाने में मदद कर रहे हैं। कई विशेषज्ञों का अब मानना है कि बेहतर रिएक्टर डिजाइन और शक्तिशाली नैदानिक प्रौद्योगिकियों के संयोजन से अगले कुछ दशकों में प्यूजन पावर प्लांटों की पहली पीढ़ी संभव हो सकेगी।

एक स्वच्छ ऊर्जा भविष्य यदि संलयन शक्ति व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य हो जाती है, तो यह वैश्विक ऊर्जा परिवर्तन को बदल सकती है। प्यूजन रिएक्टर समुद्री जल में हाइड्रोजन से प्राप्त प्रचुर मात्रा में ईंधन का उपयोग करके भारी मात्रा में बिजली उत्पादन कर सकते हैं।

जो वाशम ईंधन के विपरीत, संलयन से कोई कार्बन उत्सर्जन नहीं होगा, जिससे जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद मिलेगी।

ईरान में आँधे मुँह गिरने पर ट्रंप के बोल - मदद करो !!!

डॉ. रामा तक्षक, निदरलैण्ड

18 फरवरी को शुरू हुआ ईरान का युद्ध, अब वैश्विक स्तर पर, एक समस्या बनकर उभरा हो गया है। ईरान पर इजरायल और अमेरिका द्वारा थोपे गये युद्ध में हजारों आसानी युद्ध की बत्ती चढ़ गयी है। पूरा मध्य पूर्व युद्ध की चपेट में है। लगभग पूरा विश्व, अमेरिका और इजरायल को छोड़कर यह आस लगाएँ कि युद्ध कब खत्म हो, अब खत्म हो



डॉ. रामा तक्षक

युद्ध की शुरुआत में, कुछ सत्ता परिवर्तन सम्बंधक लोग ईरान की सड़कों पर निकले थे लेकिन क्रांति का रूप न लेकर, सड़कों पर जल की शांति छा गई। दो सप्ताह से अधिक समय की कब्रारी और ईरान का अमेरिकी अड्डे पर बिसाल्लों से उग्रत जवाब, लेर्जून की अक्रियता से नाकेबंदी से अब राजा पहलवी के बेटे को ईरान की सत्ताधारी बनने बनाने का सपना भी धराशायी हो गया है। अमेरिकी सैनिकों की ईरान की धरती पर अस्थिरित के बिना सत्ता परिवर्तन सम्भव नहीं है। सत्ता परिवर्तन की अगुआई मिलेगी

जन्ता को सैनिकों का साथ चाहिए। ईरान पर युद्ध शोक के बाद, ट्रंप नाटो देशों को सीधे-सीधे यह कह रहा है कि यदि इस समय तुमने मेरी मदद नहीं की तो हम इस बात को याद रखेंगे। मूलतः नाटो में यूरोप के देश हैं। रुस द्वारा यूक्रेन पर थोपा गया युद्ध अपने वार करस पूरे कर चुका है। यह युद्ध यूरोप के अंग्रेज से जुड़ा है। यूक्रेन ही नहीं ईरान भी वार साल से इस युद्ध से अगुआई दिखाने की धरती और आर्थिक कारणों से जुड़ा रहा है। यूरोपीय देश किसी भी क्रीत पर नहीं चाहते कि यूक्रेन पर रुस का आधिपत्य हो जाए। ईरान युद्ध पर अमेरिका का साथ देने में यूरोप की स्थिति सॉफ के मुँह में छुड़कर की सी है।

यदि रुस के विरुद्ध 20 प्रतिशत कच्चा तेल लेर्जून की खाड़ी से लेकर दुर्बियों भर में सलाई किया जाता है। ट्रंप लेर्जून की खाड़ी में तेल टैंकरों के यातायात को ईरान के अक्रियता से बनाने के लिए चीन को भी डाल बनने के लिए कह रहा है। चीन ऐसा क्यापि नहीं करेगा। ईरान के युद्ध से चीन मजबूत हो रहा है।

ड्रम ने ईरान पर, युद्ध शोक के समय, नाटो देशों के साथ सम्बंध नहीं किया था। नाटो देशों को इस युद्ध की कानूनी खबर नहीं थी। इसी कारण यूरोपीय देश कर रहे हैं कि यह लम्बा युद्ध नहीं है। लताँकि ईरान युद्ध की शुरुआती के दिनों में ब्रिटेन के फ़्लान्क्सी स्ट्रामर ने अमेरिका की मदद की परन्तु ट्रंप ने कस लम्ब युद्ध जीत रहे हैं। मदद की क्या जरूरत है।

अमेरिका के दादा ने दुर्बियों के देशों पर, ताबड़तोड़ व्यापार कर लगाकर निर्विघ्नता शुरू कर दिया था। आज भी अमेरिकी दादागिरी लेर्जून की खाड़ी में हस्तगत के लिए गिरावरी पर तारी हुई है। ट्रंप चीन जैसे प्रदीर्घ से सख्योग वाला है। अमेरिकी अक्रियता पेटल पंप पर, करों में पेटल भरते समय, मन्डे दाँतों में पेटल खरीद कर कर रहे हैं कि ईरान युद्ध में खरब ल्मारी जेब से लो रहा है। यह सब लम्बा पैसा है, ट्रंप का पैसा नहीं है। युद्ध विशेषज्ञों द्वारा इस युद्ध के शुरुआत के दो दिनों में हुए युद्ध खर्च का आकलन पाँच बिलियन से अधिक का खर्च आँका जा रहा है। इन 18 दिनों में किरतना खर्च हुआ लेग्ना सख से अंदाजा लगाया जा सकता है। ट्रंप अपने ही किये के जाल में फँस गया है। अमेरिका ब्रेट

अमेरिका के अंदर अंधेरे में उड़ना संलयन रिएक्टर के अंदर प्लाज्मा जटिल और अप्रत्याशित तरीके से कार्य करता है। छोटी-छोटी अस्थिरताओं के कारण प्लाज्मा कैद से बच सकता है, जिससे प्रतिक्रिया

उत्तराखंड की समान नागरिक संहिता पर वैश्विक प्रश्नचिह्न

जयसिंह रावत

हाल ही में जारी 'अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग' की 2026 की वार्षिक रिपोर्ट ने भारत की आंतरिक नीतियों को लेकर अंतरराष्ट्रीय विमर्श को पुनः तोड़ कर दिया है। इस बार विवाद का केंद्र केवल राष्ट्रीय नीतियाँ नहीं बल्कि उत्तराखंड की समान नागरिक संहिता (यूसीसी) भी है। यह अपने आप में ऐतिहासिक और कूटनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पहली बार किसी हिमालयी राज्य के क्षेत्रीय विधान को धार्मिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के वैश्विक मानकों के संदर्भ में इस गहनता से परखा गया है। रिपोर्ट में भारत को लगातार सातवें वर्ष 'विशेष चिंता वाले देश' की श्रेणी में रखने की अनुशंसा की गई है और उत्तराखंड की इस संहिता को धार्मिक स्वतंत्रता की कथित गिरती स्थिति के एक प्राथमिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।



जयसिंह रावत

के 'प्रायोगिक प्रतिमान' के रूप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि यह विधान अब राज्य की सीमाओं तक सीमित न रहकर अंतरराष्ट्रीय अधिकार विमर्श और कूटनीतिक चर्चाओं का विषय बन गया है।



प्रत्यक्ष अतिरिक्त

विधिक बारीकियाँ और वैचारिक संघर्ष इस संहिता के भीतर कई ऐसे प्रावधान हैं जिन पर आयोग ने विशेष चिंता व्यक्त की है। उदाहरण के तौर पर, उत्तराधिकार के नियमों में पुत्र और पुत्री को समान अधिकार देना राज्य की दृष्टि में लैंगिक न्याय है किंतु रिपोर्ट इसे कुछ धार्मिक समुदायों के 'धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं' में हस्तक्षेप के रूप में देखती है। इसके अतिरिक्त विवाह विच्छेद (तलाक) के लिए केवल न्यायिक प्रक्रिया को अनिवार्य बनाना उन समुदायों के लिए चुनौती माना गया है जहाँ धार्मिक रीति-रिवाजों के माध्यम से विच्छेद की परंपरा रही है।

अमेरिकी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में इस बात पर भी बल दिया है कि 'समानता' का अर्थ 'एकरूपता' नहीं होना चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार, भारत जैसे देश की शक्ति उसकी विविधता में निहित है और जब राज्य किसी एक समुदाय के मानदंडों को सभी पर लागू करने का प्रयास करता है तो वह धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक सिद्धांत का उल्लंघन होता है। यह तर्क भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 के अंतर्गत मिलने वाली धार्मिक स्वतंत्रता और अनुच्छेद 44 के नीति निर्देशक तत्वों के बीच के उस पुराने संघर्ष को वैश्विक मंच पर ले आया है।

निजता का अधिकार और राज्य का हस्तक्षेप रिपोर्ट की सर्वाधिक प्रखर आपत्ति लिव-इन संबंधों के अनिवार्य पंजीकरण को लेकर है। संहिता के अनुसार, ऐसे संबंधों में रहने वाले व्यक्तियों को एक महीने के भीतर पंजीकरण कराना अनिवार्य है अन्यथा उन्हें कारावास और अर्थदंड के सामना करना पड़ सकता है। आयोग का मानना है कि दो व्यक्तियों के आपसी सहमति वाले निजी संबंधों को राज्य के समक्ष दर्ज कराना निजता के मौलिक अधिकार में

भारत सरकार और विदेश मंत्रालय ने इस रिपोर्ट को पूर्णतः पक्षपातपूर्ण, प्रेरित और झुट्टपूर्ण बताकर अस्वीकार कर दिया है। भारत का स्पष्ट मत है कि उसकी लोकतांत्रिक संस्थाएँ और न्यायिक व्यवस्था किसी विदेशी एजेंसी के प्रमाणपत्र की मोहताज नहीं हैं। भारत का तर्क है कि उत्तराखंड की संहिता संविधान के निर्माताओं के उस स्वप्न का हिस्सा है जिसे नीति निर्देशक तत्वों में स्पष्ट रूप से दर्ज किया गया था।

भारत ने पलटवार करते हुए यह भी कहा है कि अमेरिकी आयोग को भारत पर टिप्पणी करने से पूर्व अपने स्वयं के देश के भीतर बढ़ती 'हिंदूत्व विरोध' (हिंदू विरोध), पूजा स्थलों पर हमलों और भारतीय प्रवासियों के प्रति बढ़ती कटुता पर ध्यान देना चाहिए। भारत इसे अपनी आयोग की अनुशंसाएँ अमेरिकी विदेश विभाग पर अनिवार्य रूप से लागू नहीं होंगी, फिर भी ऐसी रिपोर्टों का प्रभाव कूटनीतिक वार्ताओं में 'सॉफ्ट पावर' और अंतरराष्ट्रीय मीडिया की सुविधियों के माध्यम से बना रहता है।

उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के लिए उत्तराखंड की समान नागरिक संहिता अब केवल एक राज्य का कानून नहीं रह गई है, बल्कि यह इस बात का पैमाना बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन विविधता और भविष्य की विधिक एकरूपता के बीच संतुलन कैसे बनाएगा। यह विवाद दो विचारधाराओं का टकराव है—एक जो राष्ट्र की एकता के लिए नियमों की एकरूपता को आवश्यक मानती है, और दूसरी जो मानती है कि न्याय तभी संभव है जब विविध संस्कृतियों की विशिष्टता को स्वीकार किया जाए। अतः, उत्तराखंड का यह प्रयोग पूरे देश के पैमाने बन गई है कि आधुन

विद्युत वाहन चार्जिंग हादसा: प्रगति की रफ्तार के साथ सुरक्षा की अनदेखी पर बड़ा प्रश्नचिन्ह

अजय कुमार बियानी

इंजीनियर और स्वतंत्र लेख
हर में हाल ही में घटित विद्युत वाहन चार्जिंग से जुड़ी भीषण आग की घटना, जिसमें एक ही परिवार के कई लोगों की असाध्यिक मृत्यु हुई, केवल एक दुर्घटना नहीं बल्कि आधुनिक विकास मॉडल की गंभीर खामियों को उजागर करने वाली त्रासदी है। यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम तकनीकी प्रगति की दौड़ में सुरक्षा के मूलभूत मानकों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। देश में पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विद्युत वाहनों को तेजी से अपनाया जा रहा है। शासन द्वारा प्रोत्साहन योजनाएं, कंपनियों द्वारा नए मॉडलों का विस्तार और नागरिकों में बढ़ती स्वीकार्यता—ये सभी संकेत हैं कि भविष्य विद्युत आधारित परिवहन का है। किन्तु इस परिवर्तन के साथ आवश्यक सुरक्षा संरचना का विकास उतनी ही गंभीरता से हुआ है या नहीं, यह एक बड़ा प्रश्न है।

विद्युत वाहनों में प्रयुक्त बैटरियां आधुनिक होते हुए भी संवेदनशील होती हैं। चार्जिंग के दौरान अत्यधिक तापमान, तकनीकी त्रुटि अथवा

अनुचित उपकरणों के उपयोग से आग लगने की संभावना बनी रहती है। विशेष रूप से जब घरेलू स्तर पर बिना मानक व्यवस्था के चार्जिंग की जाती है, तब जोखिम कई गुना बढ़ जाता है। विकसित देशों में इस प्रकार की घटनाओं के बाद कठोर दिशा-निर्देश और सुरक्षा मानक लागू किए गए हैं, जबकि हमारे यहां अभी भी इस दिशा में स्पष्टता और सख्ती का अभाव दिखाई देता है।

यह घटना शहरी ढांचे की एक और कमजोरी को भी सामने लाती है—अग्नि सुरक्षा के प्रति लापरवाही। अधिकांश आवासीय भवनों में न तो धुआं पहचानने वाली प्रणाली है, न आपातकालीन निकास की समुचित व्यवस्था और न ही अग्निशमन उपकरणों की उपलब्धता। जब तक आग नियंत्रण में आती है, तब तक नुकसान अपरिवर्तनीय हो चुका होता है। यह स्थिति बताती है कि भवन निर्माण से लेकर उसके उपयोग तक सुरक्षा मानकों को केवल कागज में ही सीमित कर दिया गया है।

इस त्रासदी के संदर्भ में उत्तरदायित्व का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। क्या वाहन निर्माताओं ने अपने उत्पादों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त परीक्षण और जागरूकता प्रदान की? क्या चार्जिंग उपकरण मानकों के



अनुरूप थे? क्या स्थानीय प्रशासन ने भवनों की अग्नि सुरक्षा की नियमित जांच की? और क्या विद्युत आपूर्ति से जुड़े विभागों ने बढ़ते भार और संभावित जोखिमों का आकलन किया? इन सभी प्रश्नों के उत्तर ही भविष्य की दिशा तय करेंगे। वास्तव में यह घटना तकनीकी विफलता से अधिक व्यवस्थागत कमजोरी की ओर संकेत

करती है। यदि नीति निर्माण, क्रियान्वयन और जनजागरूकता तीनों स्तरों पर समन्वय का अभाव रहेगा, तो ऐसी दुर्घटनाएं बार-बार दोहराई जा सकती हैं। आवश्यक है कि विद्युत वाहनों के लिए सुरक्षित चार्जिंग व्यवस्था को अनिवार्य बनाया जाए, भवनों में अग्नि सुरक्षा मानकों का कठोरता से पालन सुनिश्चित किया जाए और

नागरिकों को इसके प्रति जागरूक किया जाए। तकनीक का उद्देश्य मानव जीवन को सुरक्षित, सरल और सुविधाजनक बनाना है। यदि वही तकनीक असुरक्षा का कारण बनने लगे, तो विकास की अवधारणा अधूरी मानी जाएगी। इसलिए यह समय केवल शोक व्यक्त करने का नहीं, बल्कि ठोस निर्णय लेने का है।

यदि इस घटना को एक चेतावनी के रूप में नहीं लिया गया, तो भविष्य में ऐसे हादसे केवल आंकड़ों में नहीं बल्कि असंख्य परिवारों के जीवन में स्थायी शून्य छोड़ जाएंगे। प्रगति की दिशा वही सार्थक होगी, जिसमें सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए और प्रत्येक नागरिक का जीवन वास्तव में सुरक्षित हो सके।

मजीठा रोड पुलिस ने अस्पताल से नवजात बच्चे का अपहरण करने वाली महिला को किया गिरफ्तार, 24 घंटे में बच्चा बरामद कर परिवार को सौंपा

अमृतसर 19 मार्च (साहिल बेरी)

दिनांक 19.03.2026 को शिकायतकर्ता रानी कौर पत्नी लवप्रीत सिंह निवासी गांव कसेल पत्ती किलेवाली, जिला तरनतारन ने थाना मजीठा रोड, अमृतसर में सूचना दी कि उसने 15.03.2026 को एक पुत्र को जन्म दिया। उसकी तबीयत खराब होने के कारण उसे पीएचसी अस्पताल कसेल से गुरु नानक देव अस्पताल (बेबे नानकी), अमृतसर रेफर किया गया, जहां उसे गायनी वार्ड नंबर 2 में दाखिल किया गया।

शिकायतकर्ता के अनुसार, एक लगभग 25-30 वर्ष की महिला पिछले तीन दिनों से वार्ड में आ रही थी और मरीजों से घुल-मिल गई थी। वह बच्चों को गोद में उठाकर खेलती रहती थी, जिसमें उसका बच्चा भी शामिल था। घटना वाले दिन भी वह महिला आई और करीब 1 बजे बच्चे को गोद में लेकर बाहर चली गई। उस समय परिवार के सदस्य कुछ समय के लिए बाहर गए हुए थे और स्टफ न भी वार्ड खाली



करने को कहा था। महिला ने कहा कि वह बच्चे को दूसरी मरीज के पास ले जा रही है, लेकिन वह वापस नहीं आई। पुलिस कमिश्नर अमृतसर श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर (IPS) के आदेशानुसार तथा एडीसीपी

सिटी-2 श्री श्रीवनीला (IPS) और एसीपी श्री गगनदीप सिंह (PPS) के दिशा-निर्देशों में एसएचओ इंस्पेक्टर रणजीत सिंह हिल्लों और एसआई हरपिंदर सिंह की टीमों ने त्वरित कार्रवाई की।

सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी साधनों की मदद से पुलिस ने 24 घंटे के भीतर आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया तथा अगवा किया गया 3 दिन का नवजात बच्चा सुरक्षित बरामद कर उसके परिवार को सौंप दिया।

हरिश्चंद्रपुरम PH, मंडासा रोड और पटपटनम स्टेशनों पर ट्रेनों की ट्रायल बर्थिंग



मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: जनता की लंबे समय से चली आ रही मांग को ध्यान में रखते हुए और इलाके में रेल कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के मकसद से, रेल मंत्रालय ने ट्रायल बेसिस पर हरिश्चंद्रपुरम PH, मंडासा रोड और पटपटनम रेलवे स्टेशनों पर कुछ पैसेंजर और एक्सप्रेस ट्रेनों की बर्थिंग को मंजूरी दे दी है।

इन एक्सप्रेस बर्थिंग से आस-पास के इलाकों से आने वाले यात्रियों के लिए यात्रा में काफी सुविधा और आसानी बढ़ने की उम्मीद है।

20 मार्च 2026 से लागू सभी बर्थिंग की जानकारी नीचे दी गई है:

1. ट्रेन नंबर 58506 विशाखापत्तनम - गुनुपुर पैसेंजर हरिश्चंद्रपुरम PH पर सुबह 08:33 AM बजे पहुंचेगी और सुबह 08:34 AM बजे रवाना होगी। इसी तरह, वापसी में, ट्रेन नंबर। 5850 गुनुपुर -

विशाखापत्तनम पैसेंजर हरिश्चंद्रपुरम PH पर 17:18 PM पर आएगी और 17:19 PM पर चलेगी।

2. ट्रेन नंबर 18526 विशाखापत्तनम - बरहमपुर एक्सप्रेस मंडासा रोड पर 19:03 PM पर आएगी और 19:04 PM पर चलेगी।

3. ट्रेन नंबर 18525 बरहमपुर - विशाखापत्तनम एक्सप्रेस मंडासा रोड पर 10:38 AM पर आएगी और 10:39 AM पर चलेगी।

4. ट्रेन नंबर 18117 राउरकेला - गुनुपुर राज्य रानी एक्सप्रेस पटपटनम पर 11:51 AM पर आएगी और 11:52 AM पर चलेगी।

5. ट्रेन नंबर 18118 गुनुपुर - राउरकेला राज्य रानी एक्सप्रेस पटपटनम पर 17:12 AM पर आएगी और 17:13 पर चलेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे इन अस्थायी व्यवस्थाओं पर ध्यान दें और बेहतर यात्रा सुविधाओं का लाभ उठाएं।

सीमा पार से चल रहे हथियार तस्करी माँड्यूल का भंडाफोड़, नाबालिग सहित छह आरोपी अमृतसर में गिरफ्तार; सात आधुनिक पिस्तौल बरामद



- पुर्तगाल से सक्रिय विदेशी हंडलर के संपर्क में थे गिरफ्तार आरोपी : डीजीपी गौरव यादव
- आपराधिक तत्वों को आगे सप्लाई करनी थी बरामद की गई खेप : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर
चंडीगढ़ / अमृतसर, 19 मार्च (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों पर पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत बड़ी सफलता हासिल करते हुए अमृतसर कमिश्नरेंट पुलिस ने नाबालिग सहित छह आरोपियों को सात आधुनिक पिस्तौलों समेत गिरफ्तार कर सीमा पार से चल रहे एक हथियार तस्करी माँड्यूल का भंडाफोड़ किया है। यह जानकारी पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने आज यहां दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान अमृतसर के गांव बुरज के गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी (27), बटाला के सुंदर नगर के मनीष कुमार उर्फ जैरी (24), अमृतसर के गांव चूकवाल के सरूप सिंह उर्फ रूप (27), अमृतसर के गांव फतेहपुर राजपुरा के चमकौर सिंह (20) और तरनतारन के भिखीवंड के वंश शर्मा (23) के रूप में हुई है। बरामद हथियारों में पांच 9 एमएम मलॉक पिस्तौल और दो .30 बोर पिस्तौल शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि आरोपी पुर्तगाल स्थित एक विदेशी हंडलर के संपर्क में थे, जो ड्रोन के माध्यम से पाकिस्तान से अवैध हथियारों की तस्करी में उनकी मदद करता था। उन्होंने कहा

कि आरोपी इन हथियारों की खेप प्राप्त कर उन्हें आगे आपराधिक तत्वों तक पहुंचाते थे।

डीजीपी ने कहा कि पूरे नेटवर्क को खत्म करने के लिए आगे-पीछे के लिंक स्थापित करने हेतु और जांच की जा रही है।

पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि खुफिया सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने योजनाबद्ध तरीके से एक नाबालिग समेत गुरप्रीत उर्फ गोपी को गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से दो 9 एमएम मलॉक पिस्तौल बरामद किए। आगे की छूटाछ के दौरान हुए खुलासे के आधार पर उसके साथियों मनीष उर्फ जैरी, सरूप उर्फ रूप और चमकौर सिंह को गिरफ्तार किया गया और उनके कब्जे से तीन और 9 एमएम मलॉक पिस्तौल बरामद किए गए। उन्होंने बताया कि बाद में आरोपी चमकौर सिंह द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर वंश शर्मा को भी दो .30 बोर पिस्तौलों सहित गिरफ्तार कर लिया गया।

सीपी ने बताया कि आरोपी मनीष उर्फ जैरी पिछले साल बटाला में पुलिस अधिकारियों पर हुई फायरिंग की घटना में शामिल था और फरार चल रहा था। इसी तरह आरोपी सरूप उर्फ रूप का भी आपराधिक रिकॉर्ड है और उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट और चोरी के कई मामलों दर्ज हैं।

इस संबंध में अमृतसर के पुलिस स्टेशन छावनी में शास्त्र अधिनियम की धारा 25(6), 25(7)(1) और 25(8) के तहत एक आईआर नंबर 42 दिनांक 11-03-2026 को मामला दर्ज किया गया है।

BLO की ड्यूटी में लापरवाही: असिस्टेंट टीचर सस्पेंड

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेसिव रिवीजन में बड़ी लापरवाही के लिए एक असिस्टेंट टीचर को सस्पेंड कर दिया गया है। भुवनेश्वर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन (BMC) के जारी ऑर्डर के मुताबिक, गवर्नमेंट हाई स्कूल, चंद्रशेखरपुर फेज-II की असिस्टेंट टीचर श्रीमती रश्मि साहू को ड्यूटी से सस्पेंड कर दिया गया है।

जानकारी के मुताबिक, श्रीमती साहू को असेंबली सीट नंबर 113 के वृथ नंबर 109 के लिए बूथ लेवल ऑफिसर (BLO) अपॉइंट किया गया था। वह स्पेशल इंटेसिव रिवीजन (SIR) के काम में लगी थीं, जो वोटर लिस्ट की एक्यूरेसी और ऑथेंटिसिटी पक्का करने के लिए जरूरी है।

हालांकि, कंप्लेंट के मुताबिक, वह बिना किसी वैलिड वजह या पहले से परमिशन के ड्यूटी से एबसेंट होकर अपनी ड्यूटी करने में फेल रही। बिना किसी वैलिड वजह या पहले से परमिशन के काम से एबसेंट रहना बड़ी लापरवाही और ड्यूटी में कोताही माना गया है। भुवनेश्वर नगर निगम कमिश्नर और जिला चुनाव अधिकारी श्री चंचल राणा ने रिप्रिजेंटेशन ऑफ द पीपल एक्ट, 1950 के सेक्शन 32(1) के तहत सस्पेंशन ऑर्डर जारी किया है।

ऑर्डर में कहा गया है कि सस्पेंशन पीरियड के दौरान, सुश्री साहू को बिना पहले से इजाजत लिए अपना हेडक्वार्टर छोड़ने की इजाजत नहीं होगी और उन्हें रेगुलर अलाउंस मिलेंगे।



कोरेमुला स्थित श्री आई माता मंदिर (बडेर) में चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन आयोजित हवन व पूजा कार्यक्रम में उपस्थित अध्यक्ष कालुराम काग, सुरेश लचेटा, पंडित बाबूलाल शर्मा, संपत शर्मा, पुजारी पोककरराम काग, नगाराम काग, महिला मंडल कंचन देवी काग, कविता देवी लचेटा, सुनिता काग व अन्य।



शमशाबाद स्थित श्री आई माता मंदिर (बडेर) में चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन आयोजित हवन व पूजा कार्यक्रम में उपस्थित अध्यक्ष आशाराम गेहलोत, सचिव भोलाराम पंवार, कोषाध्यक्ष राजुराम परिहार, भुराराम परिहार, मोहनलाल बर्फा, पंडित नितेश महाराज, महिला मंडल तीजादेवी गेहलोत, संतोष देवी परिहार, लक्ष्मी बर्फा, व अन्य।

रावी और ब्यास जलाधिकरण मोहरा बना उतर भारत की गरमाई राजनीति सियासत :- अधिवक्ता पूनम आर्या

हरियाणा हिसार : राजेश सलूजा

रावी और ब्यास जलाधिकरण (Ravi and Beas Waters Tribunal या RBWT) भारत के सबसे लंबे समय तक चल रहे अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों में से एक है। यह रावी और ब्यास नदियों के अधिशेष जल (जो 1960 की सिंधु जल संधि के तहत भारत को पूरी तरह मिली पूर्वी नदियों का हिस्सा है) के बंटवारे से जुड़ा है, जिसमें पंजाब, हरियाणा और राजस्थान शामिल हैं।

पृष्ठभूमि और गठन
— यह अधिकरण अप्रैल 1986 में अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम, 1956 (संशोधित) के तहत गठित किया गया। इसका सीधा आधार 24 जुलाई 1985 को तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और शिरोमणि अकाली दल नेता संत हरचंद सिंह लोंगोवाल के बीच हस्ताक्षरित राजीव-लॉगोवाल समझौते (पंजाब समझौता) का पैराग्राफ 9 है।

इसमें मुख्य कार्य (समझौते के पैरा 9.1-9.2 से) 1 जुलाई 1985 तक पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में किसानों/उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग किए जा रहे पानी की मात्रा की जांच करना (मौजूदा उपयोग की रक्षा के लिए)। अधिशेष/बचे पानी में पंजाब और हरियाणा के दावों का फैसला करना। अधिकरण को मूल रूप से 6 महीने में बाधकारी फैसला देना था, लेकिन स्पष्टीकरण, आपत्तियों और बार-बार विस्तार के कारण यह लगभग 40 साल से चल रहा है।

पूर्व-ट्रिब्यूनल ऐतिहासिक बंटवारा अधिशेष रावी-ब्यास जल (विभाजन पूर्व उपयोग ₹3.13 MAF को छोड़कर) कई बार बांटा गया जिसमें 1955 मुख्यमंत्री सम्मेलन-प्रारंभिक बंटवारा, 1976 सरकार अधिसूचना (1966 पंजाब पुनर्गठन के बाद) 1, 1981 त्रिपक्षीय समझौता (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान के मुख्यमंत्री) : अनुमानित अधिशेष ₹17.17 MAF; राजस्थान को 8.60 MAF, पंजाब को 4.22 MAF, हरियाणा को 3.50 MAF। अधिकरण की 1987 रिपोर्ट (अंतरिम/प्रारंभिक पुरस्कार), 30 जनवरी 1987 को प्रस्तुत (राज्यों को 20 मई 1987 को भेजी गई)। 1985 पूर्व उपयोग सत्यापित: पंजाब ₹3.106 MAF,

हरियाणा ₹1.620 MAF, राजस्थान ₹4.985 MAF। बचे/अधिशेष में (पंजाब बनाम हरियाणा): पंजाब को 5.00 MAF और हरियाणा को 3.83 MAF सिफारिश (उतार-चढ़ाव में अनुपातिक समायोजन)। पंजाब के तर्क को यह कहते खारिज किया कि गैर-नदी-उद्गम (non-riparian) राजस्थान को अधिशेष पर कोई दावा नहीं। यह रिपोर्ट अंतिम नहीं थी; अगस्त 1987 में राज्यों (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान) और केंद्र ने ISRWD अधिनियम की धारा 5 (3) के तहत स्पष्टीकरण/संशोधन के लिए संदर्भ दिए, जो आज तक लंबित हैं। क्वॉं मामला अनसुलझा है (मार्च 2026 तक की स्थिति) अधिकरण ने क्वॉं अंतिम, अधिसूचित पुरस्कार जारी नहीं किया — केवल 1987 की अंतरिम रिपोर्ट है, जिसमें स्पष्टीकरण संदर्भ अनसुलझा है। पंजाब ने 2004 में पंजाब समझौते समाप्ति अधिनियम (PTAA) पारित किया, जिसमें पूर्व समझौतों (1981 सहित) को समाप्त कर दिया और पंजाब को दायित्वों से मुक्त किया। राष्ट्रपति संदर्भ पर सुप्रीम कोर्ट ने 2016 में इसे असंवैधानिक घोषित किया। मामला अधिकरण के समक्ष sub judge है और SYL नहर जैसे जुड़े सुप्रीम कोर्ट मामलों से जुड़ा। केंद्र द्वारा अधिकरण की अवधि सालाना बढ़ाई जाती है (ISRWD अधिनियम की धारा 5 (3) की उप-धारा के प्रावधान के तहत)। नवीनतम विस्तार रिपोर्ट जमा करने की समय सीमा को 5 अगस्त 2026 तक बढ़ा दिया गया है। जिसमें हाल की गतिविधियां (2025-2026): अधिकरण के सदस्य (अध्यक्ष जस्टिस विनीत सरन, सदस्य जस्टिस पी. नवीन राव और जस्टिस सुमन श्याम) ने फील्ड विजिट/बैठके कीं, जैसे फरवरी 2026 में पंजाब में रोपड़ निरीक्षण (किरती किसान यूनियन के किसानों के बड़े विविध और हाईवे ब्लॉक के कारण रद्द), पंजाब सीएम भगवंत मान ने फरवरी 2025 में अधिकरण से मुलाकात की (2026 संदर्भ में दोहराया), कहा कि पंजाब के पास "किसी राज्य को देने के लिए कोई पानी नहीं", भूजल की कमी, खेतों में उपयोग दक्षता में सुधार (₹21-22% से 60%+),



और कोई अधिशेष नहीं। वही दूसरी तरफ हरियाणा ने सहकारी संघवाद के लिए चर्चाओं का स्वागत किया। पंजाब में विरोध जारी, riparian अधिकारों पर खतरों की आशंका। SYL नहर (1990 के दशक से पंजाब विरोध के कारण रुकी) और व्यापक रावी-ब्यास बंटवारे से जुड़ा महत्वपूर्ण। वर्तमान व्यावहारिक बंटवारा (अंतरिम/परिचालन) भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (BBMB) द्वारा प्रबंधित। हाल के वर्षों में उदाहरण: पंजाब ₹5.512 MAF, हरियाणा ₹2.987 MAF, राजस्थान ₹3.318 MAF (लेकिन ओवर-ड्रॉइंग पर विवाद, जैसे हरियाणा साल की शुरुआत में हिस्से से अधिक ले लेता है)। पंजाब का तर्क: बदलती जलवायु (कम प्रवाह, जलवायु तनाव, अत्यधिक दोहन) से अब सच्चा अधिशेष नहीं, गैर-riparian दावे कमजोर।

(2026 संदर्भ), यह अधिकरण पंजाब की हालिया राजस्थान से ₹1.44 लाख करोड़ की मांग (1920 गंग नहर समझौते से जुड़ी) से जुड़ा है। पंजाब अधिकरण का इस्तेमाल गैर-riparian राज्यों (जैसे राजस्थान) को "मुफ्त" या अतिरिक्त आवंटन के खिलाफ तर्क देने के लिए कर

रहा है। 1987 रिपोर्ट की गैर-अंतिम स्थिति सब कुछ लटका रखती है। पंजाब का मामला riparian प्रार्थमिकता और वर्तमान कमी पर टिका, लेकिन सिंचाई सफलताएं (उच्च उपयोग) "कोई अधिशेष नहीं" दावे को कमजोर कर सकती हैं। अगर सावधानी न बरती जाए हरियाणा अंतिमकरण चाहता है तब SYL और हिस्से सुरक्षित हों। अधिकरण का अंतिम रिपोर्ट (अगर कभी आए) सुप्रीम कोर्ट में अपील योग्य है। 19 मार्च 2026 तक रावी-ब्यास अधिकरण सक्रिय लेकिन ठप है — अगस्त 2026 तक विस्तारित, 39+ साल बाद भी कोई अंतिम पुरस्कार नहीं, विरोध, राजनीतिक बयानबाजी और बदलती जलवायु वास्तविकताओं के बीच। यह भारत में अंतर-राज्यीय जल विवादों को न्यायिक तरीके से सुलझाने की चुनौतियों का जीता-जागता उदाहरण है।

यह मामला सिर्फ पानी का नहीं, राजनीति का भी है।

आप (AAP) की पंजाब सरकार ने 66 साल पुरानी बात को उठाकर BJP शासित राजस्थान पर दबाव बनाया है। भगवंत मान कहते हैं कि कांग्रेस और अकाली दल की पिछली सरकारों ने कभी यह मुद्दा नहीं उठाया — हर 25 साल में समीक्षा का प्रावधान था, लेकिन कोई नहीं बोला। अब AAP इसे पंजाब के किसानों के हक के रूप में पेश कर रही है। पंजाब में भूजल स्तर गिर रहा है, किसान संकट में हैं — ऐसे में "राजस्थान को मुफ्त पानी" का नारा वोट बैंक को मजबूत करता है।

दूसरी ओर, राजस्थान (BJP) अभी चुप है, लेकिन अगर पानी रोका गया तो श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ के किसान बर्बाद हो जाएंगे। केंद्र (BJP सरकार) बीच में फंस जाएगा। यह AAP vs BJP की सियासत है — पंजाब अपना riparian हक दोहरा रहा है, जबकि राजस्थान 1920 के समझौते को "पुराना" बताकर बचने की कोशिश करेगा। 1981 का समझौता पंजाब विधानसभा में कभी पास नहीं हुआ, इसलिए AAP उसे चुनौती दे रही है। कुल मिलाकर, उत्तर भारत को पानी की राजनीति फिर से गरमा गई है — SYL कैनाल, रावी-ब्यास ट्रिब्यूनल और अब नया मोर्चा।

स्वदेशी जागरण मंच, देवघर ने धूमधाम से मनाया हिन्दू नव वर्ष

“टॉवर-चौक पर दीप-प्रज्वलन कर उत्साह से किया -- हिन्दू नव वर्ष का स्वागत”



देवघर। स्थानीय टॉवर चौक पर स्वदेशी जागरण मंच द्वारा भारतीय सनातन परंपरा, संस्कृति और नव चेतना का प्रतीक हिन्दू नव वर्ष पर दीप प्रज्वलन कर पूरे उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर खूब मिठाइयां बांटी गईं। मौके पर मंच के प्रान्त समन्वयक श्री मनोज कुं सिंह ने कहा कि सबों को हिन्दू नव वर्ष नव संवत्सर विक्रम संवत् २०८, युगाब्द ५१२८ के बहुत-बहुत हार्दिक बधाई व अनंत शुभकामनाएं। यह दिवस सृष्टि के नव आरंभ, धर्म सत्य और संस्कारों की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। हिन्दू नव वर्ष हमारी काल-गणना, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्र बोध को सुदृढ़ करने वाला दिन है। इस दिन हम सब मिलकर नव-संकल्पों के साथ सशक्त भारत, समृद्ध भारत व विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनें, और दुर्दशा से सभी लोग स्वदेशी अपनाने का संकल्प ले। इस अवसर पर पूर्व विधायक नारायण दास, स्वदेशी जागरण मंच के जिला संयोजक संजय सिंह, श्री प्रभाष गुप्ता, अमर सिंहा, गिरीश सिंह, आशा झा, जीवेश सिंह, सुप्रिया गुप्ता, लक्ष्मी देवी चंद्रवंशी, तनुजा सिंह, विपिन अग्रवाल, संजीव सिंह, गुड्डू बंका, सचिन सुल्तानिया, गौरी शंकर शर्मा, विद्यार्थी परिषद के राजीव जी, इत्यादि अनेकों लोग मौजूद थे।

बीएसएनएल चौक के पास आवासीय भवन में अवैध अस्पताल संचालन पर नोटिस जारी

राउरकेला: छेड़ क्षेत्र के बीएसएनएल चौक के पास स्थित एक अस्पताल पर भूमि उपयोग और भवन मानकों के कथित उल्लंघन को लेकर केंद्र नोटिस चर्चा किया गया है, जिससे आम जनता का ध्यान इस मामले की ओर आकर्षित किया गया है।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, संबंधित भवन को मूल रूप से केवल आवासीय उपयोग के लिए स्वीकृत की गई थी। हालांकि, इसे व्यावसायिक गतिविधियों, विशेष रूप से अस्पताल संचालन के लिए उपयोग किया जा रहा है, जो राउरकेला महानगर निगम (RMC) द्वारा स्वीकृत भवन योजना से विचलन है।

प्राधिकरणों ने इस मामले का संज्ञान लिया है और अनियमितताओं के बारे में जनता और संबंधित पक्षों को सूचित करने के लिए नोटिस जारी किया है। यह कदम स्वीकृत भवन योजनाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने और आवासीय क्षेत्रों में अनधिकृत व्यावसायिक उपयोग को रोकने के प्रयासों का हिस्सा है।



वहीं सामाजिक कार्यकर्ता व आर टी आई एक्टिविस्ट डॉक्टर राजकुमार यादव ने आरोप लगाते हुए कहा कि विभिन्न बिल्डिंग्स के द्वारा बनाए जा रहे कमर्शियल व रेंजिडेंशियल कंप्लेक्स पर विभाग आंखें मूंदे हैं। वहीं कर्मचारियों की आशा पूर्ण करने वाले घरों या भवनों पर कार्रवाई की जा रही है कई लंबित पिटीशन के बावजूद

हाई राइज बिल्डिंग जो हवाई अड्डे के निकट बना है उसकी अनियमितताओं पर अभी तक नगर निगम ने कोई जवाब नहीं दिया है ना किसी तरह की कोई कार्रवाई की है जो कि दुर्भाग्य जनक व निंदनीय है। नियमों और प्रावधानों के अनुसार नगर निकाय द्वारा आगे की कार्रवाई की जा सकती है।

झारखंड में बुजुर्ग को जादू-टोना वाला बताकर मानव पेशाब पीने हेतु किया मजबूर

पीड़ित के पत्नी के साथ अभद्रता की कोशिश, लातेहार एस पी ने लिया संज्ञान कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के लातेहार जिले में मानवता को शर्मसार करने वाला मामला सामने आया है, नेतर्हाट थाना क्षेत्र के दौना गांव में ग्रामीणों के एक समूह ने बुजुर्ग व्यक्ति को 'जादू-टोना' करने वाला बताकर अमानवीय यातनाएं दीं। भीड़ का जुनून इस कदर बढ़ा कि बुजुर्ग को जबरन पेशाब पीने पर मजबूर कर दिया गया। पीड़ित के बेटे बुजेश मुंडा ने मंगलवार को हुई ई-सखौफनाक घटना की जानकारी देते हुए न्याय की गुहार लगाई है। इस पूरी हिंसा के पीछे की वजह बेहद हैरान करने वाली है, दरअसल, हाल ही में



गांव में एक सड़क दुर्घटना हुई थी, जिसमें एक महिला की मौत हो गई। ग्रामीणों ने इस इत्तेफाक को बुजुर्ग के कथित 'काले जादू' से जोड़ दिया। इसी सनक में 15 लोगों के हट्ट ने एक बैठक बुलाई और बुजुर्ग को जादू टोना

करने वाला कारार देते हुए उन पर हमला बोल दिया। परिजनों का आरोप है कि भीड़ ने इत्तेफाक को बुजुर्ग के साथ ही अभद्रता की कोशिश की, जिसे उन्होंने कड़े विरोध के बाद नाकाम कर दिया।

जब गांव की स्वास्थ्यकर्मिणी हीना देवी ने ग्रामीणों के इस वहशीयन को रोकने की कोशिश की, तो भीड़ ने उन पर भी हमला कर दिया। हीना देवी के पति वीरेंद्र सिंह के मुताबिक, भीड़ ने उनकी पत्नी को बुरी तरह पीटा और मौके से भगा दिया।

हैरानी की बात यह है कि पीड़ित पक्ष जब बुधवार को नेतर्हाट पुलिस के पास पहुंचा, तो उन्हें कथित तौर पर बिना मदद के वापस भेज दिया गया। हालांकि, मामला चर्चा में आने के बाद एसपी कुमार गौरव ने संज्ञान लिया है। फिलहाल पुलिस की एक टीम गांव जाकर पूछताछ कर चुकी है, लेकिन आधिकारिक पुष्टि और केस दर्ज होना अभी बाकी है। एसपी का कहना है कि औपचारिक शिकायत मिलते ही कानून सम्मत सख्त कार्रवाई शुरू की जाएगी।

अवैध कमाई का जरिया बना परिवहन विभाग सरायकेला ?

नियम को ताक पर रख कर चलने से नित्य मर रहे हैं लोग, कुंभकर्णी नौद का माजरा क्या है ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, सरायकेला-टाटा मुख्य मार्ग पर कोलावीरा के समीप बुधवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार एक व्यक्ति की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। मृतक रमन कुमार दास का परिवार समेत भारी संख्या में महिलाएं बृहस्पतिवार को सरायकेला अस्पताल में पहुंची जहां उन्होंने लाश लेने से साफ इंकार करते हुए मुआवजे की मांग रखी। बताया जाता है कि रमन अपने परिवार का कमाने वाले एक मात्र शख्स था। उधर भारी ट्रकों समेत अन्य वाहनों की नियम के विरुद्ध चालन इस रूट पर जारी रहता है। जहां सरायकेला परिवहन विभाग मोटी कमाई का जरिया बन चुकी है यहां ईंसानी मौतें। आज स्थिति यह है कि सरायकेला से कांडा तक सड़क में प्रतिदिन दुर्घटनाएं होती हैं पर यहां नो एंटी जौन नहीं लगाया विभाग के मनसुबे पर शक के दायरे में लेकर खड़ा करता है। संभाल आता है। आखिर नियम के तहत परिवालन बढ़ा है या नियम विरुद्ध ? घटना उस समय



हुई जब दो ट्रक एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में तेज रफ्तार से जा रहे थे और घटना बुधवार शाम 6:30 के आसपास की है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, दोनों ट्रक सरायकेला से टाटा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान बाइक सवार रमन कुमार दास भी उसी मार्ग पर चल रहे थे। ओवरटेक करने के दौरान एक ट्रक से उनकी बाइक का हैंडल टकरा गया, जिससे वे संतुलन खोकर सड़क पर गिर पड़े। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, गिरते ही दोनों ट्रक बारी-बारी से उनके ऊपर से गुजर गए, जिससे उनकी घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत

हो गई। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई और स्थानीय लोगों की भारी भीड़ जुट गई। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और स्थिति का जायजालिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। घटना से आक्रोशित स्थानीय लोगों ने सड़क जाम कर दिया, जिससे कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित रहा। पुलिस द्वारा समझाने-बुझाने के बाद जाम हटाया गया। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है तथा संबंधित ट्रक जप्त कर लिए गए हैं। पर विभाग के ऊपर प्रशासन,

सरकार की दरियादिली पर लिखा जाय तो कानून भी शर्मसार हो जायेगा। उधर सरायकेला अस्पताल में उनकी परिवार की महिलाओं का रो-रोकर बुरा हाल था। बताया जाता है कि रमन दो परिवारों का भरण पोषण अकेले करता था। अब उसके पीछे उनकी विधवा एवं एक निस्सहाय बेटी रह गयीं हैं। आज अस्पताल में झारखंड मुक्ति मोर्चा के स्थानीय नेताओं भोला मोहान्ती, उमेश भोल आदि ने रमन के परिवार साथ खड़ा होकर संवेदनशीलता परिचय दिया है। जो सराहनीय है।

झारखंड के पूर्व मंत्री योगेंद्र साव का आवास कोयला परियोजना हेतु ढहाया गया

उक्त भूमि का मुआवजा राशि न्यायाधिकरण में जमा, मंत्री साव का तीव्र विरोध

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, एनटीपीसी की चट्टी बरियातू कोयला खनन परियोजना और पूर्व कृषि मंत्री योगेंद्र साव के बीच लंबे समय से चला आ रहा विवाद गुरुवार को निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया।

भारी सुरक्षा व्यवस्था और प्रशासनिक मौजूदगी के बीच जोरदार गांव के झुमरी टांड स्थित योगेंद्र साव के आवास को जेसीबी और क्रेन की सहायता से जर्मीदोज कर दिया गया। कार्रवाई को लेकर सुबह से ही पूरे क्षेत्र में भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया था। सुरक्षा घेरे के बीच दोपहर होते-होते मशीनों ने मकान को गिराना शुरू किया।

मौके पर बड़ी संख्या में प्रशासनिक अधिकारी और पुलिस बल मुस्तैद रहे ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटा जा सके। ज्ञात हो कि हाल ही में इस परियोजना की सुरक्षा की कमान केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को सौंपी गई थी, जिससे सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी हो गई थी। इस घर में उनकी मौ और पूर्व विधायक निर्मला देवी रह रही थीं। उन्होंने इसे जनप्रतिनिधियों की आवाज दबाने और कॉरपोरेट के दबाव में की गई कार्रवाई बताया। वहीं, पूर्व मंत्री योगेंद्र साव ने भी वीडियो जारी कर राज्य सरकार और एनटीपीसी पर निशाना साधा। उन्होंने इसे अनुआ सरकारी की



मनमानी बताते हुए कहा कि कॉरपोरेट हितों के लिए पहले उनका कारखाना और अब घर उजाड़ा गया है।

दूसरी ओर, परियोजना अधिकारियों ने इस कार्रवाई को पूरी तरह विधि सम्मत बताया है। अधिकारियों के अनुसार चट्टी बरियातू कोयला खनन परियोजना के विस्तार के लिए इस भूमि का अधिग्रहण अनिवार्य था। संबंधित भूमि और भवन के मुआवजे की राशि

(लगभग 1 करोड़ 97 लाख रुपये) पूर्व में ही रांची न्यायाधिकरण में जमा कराई जा चुकी है।

बता दें कि इससे पहले 1 अगस्त 2025 को भी योगेंद्र साव की फायर ब्रिक्स यूनिट को ध्वस्त किया गया था, जिसके बाद से क्षेत्र में लगातार आंदोलन और धरना प्रदर्शन चल रहे थे। इस विवाद के कारण कोयला परिवहन और खनन कार्य प्रभावित होने से टंडवा स्थित बिजली उत्पादन इकाइयों पर भी असर पड़ा है।